

ज्योतिष सुःख समृद्धि

Name - Sample

Date - 10/08/1941

Time - 02:15:00

POB - New delhi (Delhi) India

Longitude - 077:12:00 E

Latitude - 028:36:00 N



Mindsutra Software Technologies

A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059

Phone: 011-49043166, 91 9818193410



श्री गणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।	तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदारणवसम्भवम् ।	नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।	कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।	सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसनिभम् ।	बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।	सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।	छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।	सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।	रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्रिसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरूप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूँ। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूँ। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूँ। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूँ। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूँ। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूँ। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूँ। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूँ। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री-पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरुष
जन्म दिनांक	10:08:1941
जन्म समय	02:15:00
जन्म दिन	रविवार
जन्म स्थान	new delhi
राज्य	Delhi
देश	India
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:11
स्थानीय समय	001:53:48 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	-00:00
सांपातिक काल	023:05:35 hrs
इष्ट काल	51: 03: 50 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	1 9 9 8
शक संवत	1 8 6 3
संवत्सर	वृष
ऋतु	वर्षा
मास	भाद्र
पक्ष	कृष्ण
वार	
तिथि	तृतीया
नक्षत्र (पद)	पूर्वाभाद (2)
योग	अतिगण्ड
करन	विष्टी

अवकहड़ा चक्र

पाया	रजत
वर्ण	शुद्ध
वश्य	जलचर
योनि	शेर (पु०)
गण	मनुष्य
नाड़ी	आदि
रज्जु	नाभि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	बृहस्पति
विहग	मयूर
नाड़ी पद	मध्य
वेध	उत्तरफाल्ग
आद्याक्षर	सा
दशा बैलेंस	बृहस्पति-9 . 0 व . 1 . 0 म . 1 1 द .
वर्तमान दशा	चन्द्र-शनि-केतु
भयात	26: 58: 05 Ghati
भभोग	63: 13: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	कर्क
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	सिंह
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:02:29
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	05:50:28AM
सूर्यास्त	07:02:42PM
जन्मदिन का ग्रह	सूर्य
जन्मसमय का ग्रह	शनि



लग्न
मिथुन



राशि
कुम्भ

नक्षत्र - पद
पूर्वाभाद - 2



लग्नाधिपति
बुध



राशिपति
शनि



नक्षत्रपति
बृहस्पति

नक्षत्र विवरण

नक्षत्र	पूर्वाभाद
अधिपति	बृहस्पति ४
देवता	अजैकपाद
तत्व	आकाश
प्रभाव	मृत्युप्रद
पौधे	आम
कार्य पद्धति	धैर्ययुक्त

चरण	2
भाव में	द्वादश अशुभ
दिशा	उत्तर
गोत्र	पुलस्थ
पशु	शेर (पुरुष)
पक्षी	बगुला
गुण	सत्व

लग्न और राशि विवरण

लग्न विवरण	
लग्न	मिथुन II
अधिपति	बुध ४
तत्व	वायु
स्वभाव	उभय
भाव में	द्वितीय सम
लिंग	पुरुष
के साथ भावेश	सूर्य

राशि विवरण	
राशि	कुम्भ ३
अधिपति	शनि ३
तत्व	वायु
स्वभाव	स्थिर
भाव में	द्वादश अशुभ
लिंग	पुरुष
के साथ भावेश	बृहस्पति

राशि देवता	वरुण देव
मंत्र	<p>Om Jala Bimbhaya Vidmahe Nila Purushaya Dhimahi Tanno Varunah Prachodayat</p> <p>ॐ जल बिम्भाय विद्महे नील पुरुषाय धीमहि तन्नो वरुणः प्रचोदयात्</p>
<p>इन राशि देवता के मंत्रों का जाप प्रत्येक राशि के इष्टदेवों का आशीर्वाद प्राप्त करने, सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने एवं बाधाओं को दूर करने तथा अच्छे भाग्य को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है।</p>	

तत्व	वायु
<p>सामान्यतः आप बौद्धिक, संचारी और सामाजिक हैं। आप खुले विचारों वाले, जिज्ञासु हैं तथा बातचीत एवं बहस में शामिल होना पसंद करते हैं। आप अनुकूलनशील हैं और नए अनुभवों तथा नए लोगों से मिलने का आनंद लेते हैं। आप अक्सर समस्याओं को सुलझाने में श्रेष्ठ होते हैं और दूसरों के प्रति आपका दृष्टिकोण काफी कूटनीतिक हो सकता है।</p>	

स्वभाव	स्थिर
<p>आप सामान्यतः दृढ़निश्चयी, अटल और परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी हैं। आप स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करते हैं और अक्सर अपने जीवन में अचानक होने वाले बदलावों के प्रति प्रतिरोधी होते हैं। आप वफादार, विश्वसनीय हैं और जब आप अपने मन में किसी बात को ठान लेते हैं तो आप काफी जिद्दी हो सकते हैं। आप नवोन्मेषी और स्वतंत्र हैं, आप प्रौद्योगिकी, विज्ञान या सामाजिक सक्रियता से संबंधित करियर में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।</p>	

घात चक्र

चैत्र अशुभ मास	वृहस्पतिवार अशुभ वार	3 अशुभ प्रहर
धनु अशुभ राशि	कन्या अशुभ लग्न	3, 8, 13 अशुभ तिथि
अरिद्रा अशुभ नक्षत्र	ब्याधात अशुभ योग	किम्सतुघ्न अशुभ करन

शुभ बिन्दु

1 मूलांक	6 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
1, 8 शत्रु अंक	18, 21, 24, 27, 30, 33, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार, शनिवार शुभ दिन
बुध, शुक्र, शनि शुभ ग्रह	बृहस्पति अशुभ ग्रह	वृष, सिंह, तुला, धनु मित्र राशि
कन्या, धनु, कुम्भ, मेष मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
नीलम भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूर, फल शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रव्य

आपकी कुण्डली में लग्नाधारित प्रमुख बिन्दु



विभिन्न संस्.तियों और ज्ञान की खोज और अनुभव करने हेतु।

परम अकांक्षा



निरंतर अधिगम और मानसिक प्रोत्साहन।

उत्साहवर्धक प्रेरणा



दूसरों के साथ संवाद करने और विचारों को साझा करने के लिए।

जीवन का परम लक्ष्य



उत्.ष्ट संवाद कौशल और विभिन्न स्थितियों के लिए अनुकूलन क्षमता।

अनोखा उपहार/योग्यता



अनिश्चितता और असंगति की प्रवृत्ति।

सुधार के क्षेत्र



मैं सोचता हूँ, इसीलिए मैं हूँ।

मूल विचार



रचनात्मकता और बौद्धिक अन्वेषण को बढ़ावा देने वाले करियर को आगे बढ़ाने के लिए।

आगे का लक्ष्य



मानसिक चपलता और अनुकूलन क्षमता बनाए रखते हुए संचार और नेटवर्किंग के माध्यम से सफलता प्राप्त करना।

ब्यक्तित्व का मूल तत्व

ग्रह स्थिति (पराशरी)



सूर्य

कर्क

23:47:42

अश्लेषा (3)

मित्र राशि



चन्द्रमा

कुम्भ

25:44:26

पूर्वाभाद (2)

सम राशि



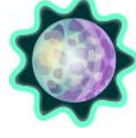
मंगल

मीन

25:32:30

रेवती (3)

मित्र राशि



बुध (अ.)

कर्क

14:00:17

पुष्य (4)

शत्रु राशि



बृहस्पति

वृष

22:48:58

रोहिणी (4)

शत्रु राशि



शुक्र

सिंह

23:31:29

पूर्वफाला (4)

स्व नक्षत्र



शनि

वृष

04:37:01

कृतिका (3)

मित्र राशि



राहु

कन्या

01:26:07

उत्तरफाला (2)

मित्र राशि



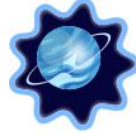
केतु

मीन

01:26:07

पूर्वाभाद (4)

सम राशि



हाल

वृष

07:00:34

कृतिका (4)

सम राशि



नेपच्यून

कन्या

02:55:44

उत्तरफाला (2)

सम राशि



प्लूटो

कर्क

11:15:04

पुष्य (3)

सम राशि



लग्न

मिथुन

07:01:34

अरिद्रा (1)

.....



10वां कस्प

मीन

22:11:00

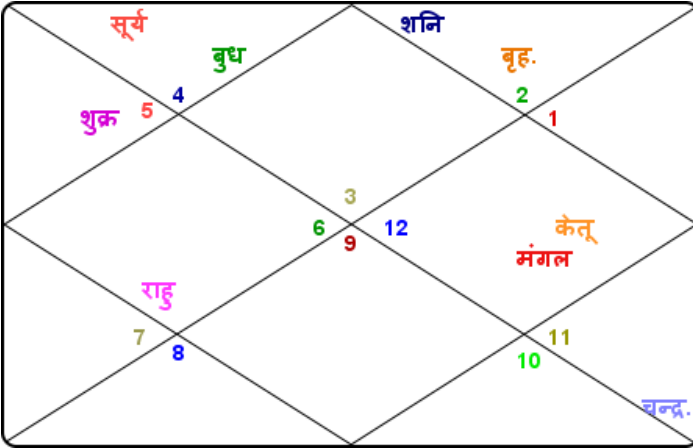
पूर्वाभाद (1)

.....

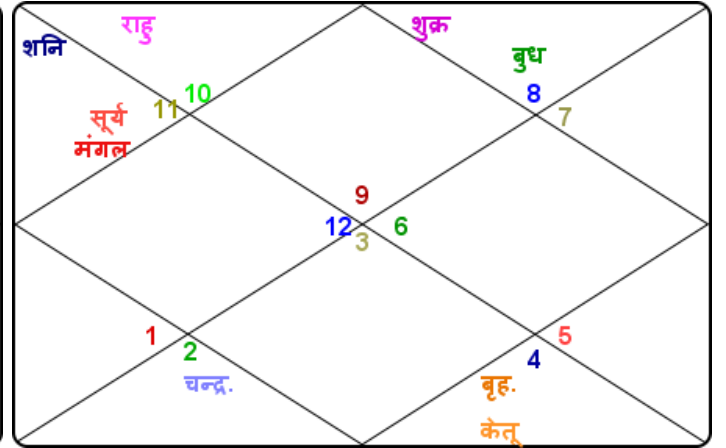
ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC लग्न		II मिथुन	07:01:34	अरिद्रा (6)	1		
☉ सूर्य		☉ कर्क	23:47:42	अश्लेषा (9)	3	भ्रात्रि	मित्र राशि
☾ चन्द्रमा		♋ कुम्भ	25:44:26	पूर्वाभाद (25)	2	आत्म	सम राशि
♂ मंगल		♋ मीन	25:32:30	रेवती (27)	3	अमात्य	मित्र राशि
♃ बुध	अ.	☉ कर्क	14:00:17	पुष्य (8)	4	ज्ञाति	शत्रु राशि
♄ बृहस्पति		♋ वृष	22:48:58	रोहिणी (4)	4	अपत्या	शत्रु राशि
♅ शुक्र		♌ सिंह	23:31:29	पूर्वफाल्गु (11)	4	मात्रि	स्व नक्षत्र
♆ शनि		♋ वृष	04:37:01	कृत्तिका (3)	3	दारा	मित्र राशि
♇ राहु		♎ कन्या	01:26:07	उत्तरफाल्गु (12)	2		मित्र राशि
♈ केतु		♋ मीन	01:26:07	पूर्वाभाद (25)	4		सम राशि
♄ हर्षल		♋ वृष	07:00:34	कृत्तिका (3)	4		सम राशि
♃ नेपच्यून		♎ कन्या	02:55:44	उत्तरफाल्गु (12)	2		सम राशि
♆ प्लूटो		☉ कर्क	11:15:04	पुष्य (8)	3		सम राशि

लग्न कुण्डली



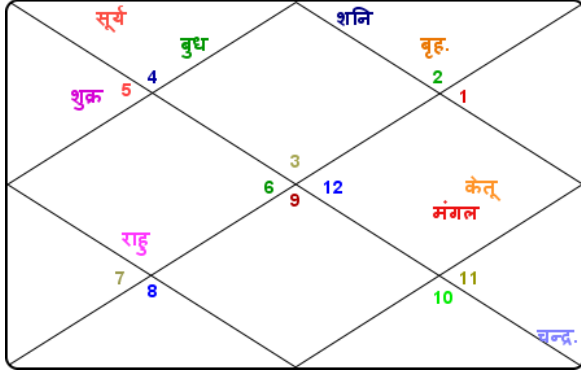
नवांश कुण्डली





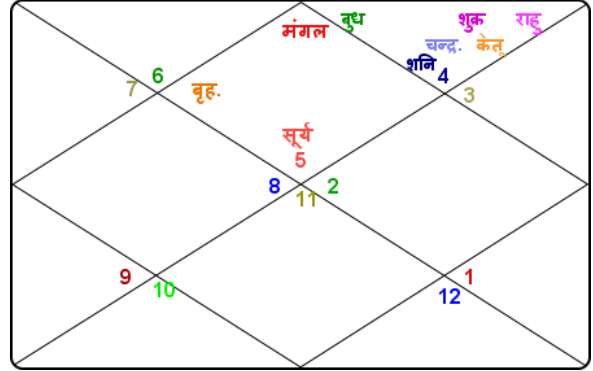
षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)



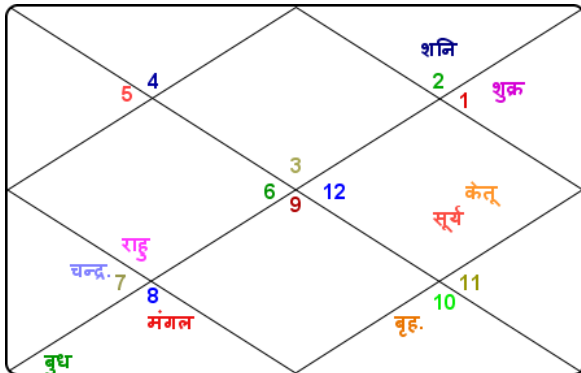
जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)



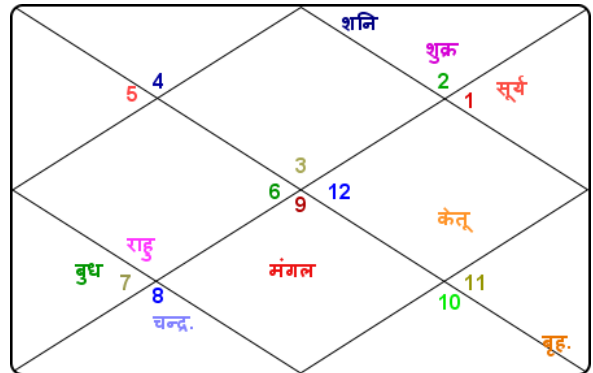
होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुण्डली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)



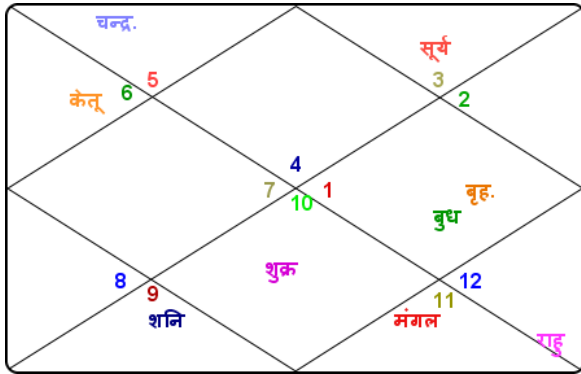
द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई-बहनों, चचेरे भाई-बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थाश कुण्डली (डी 4)



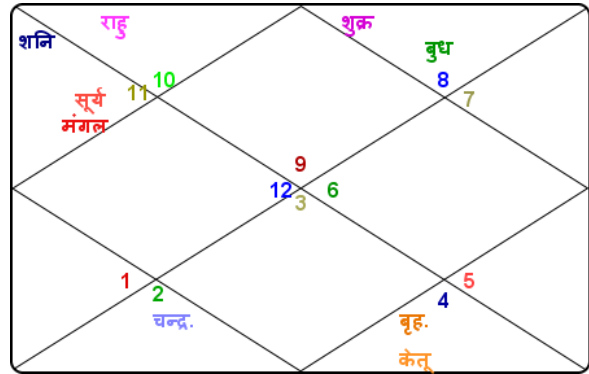
चतुर्थाश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)



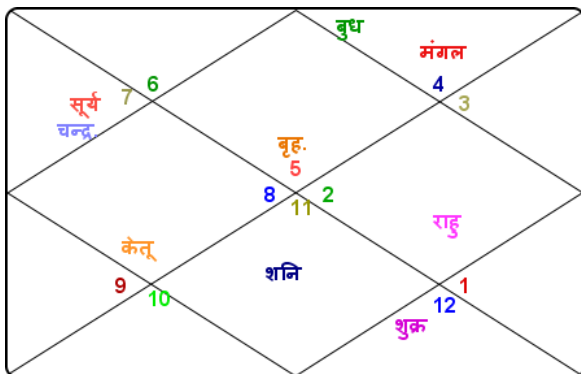
सप्तमांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)



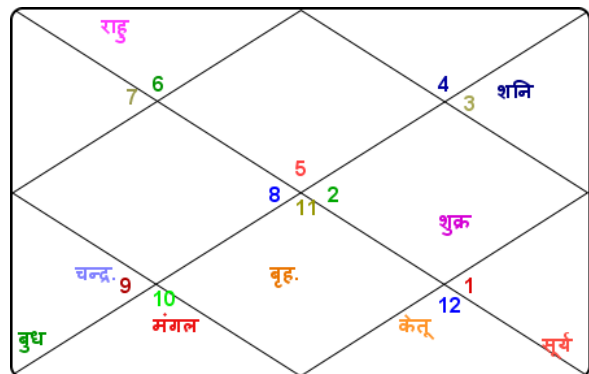
नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)



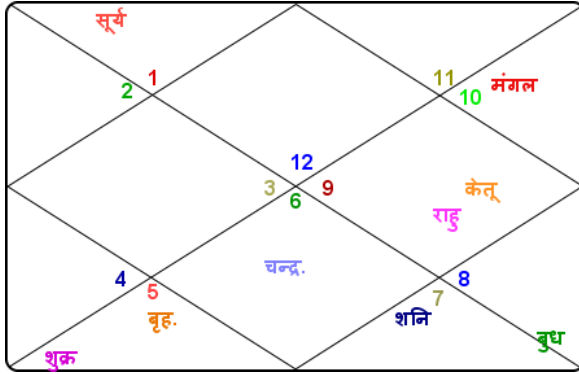
दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समय व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)



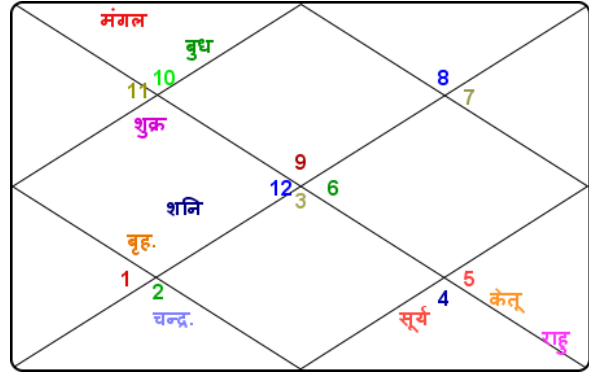
द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता-पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता-पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)



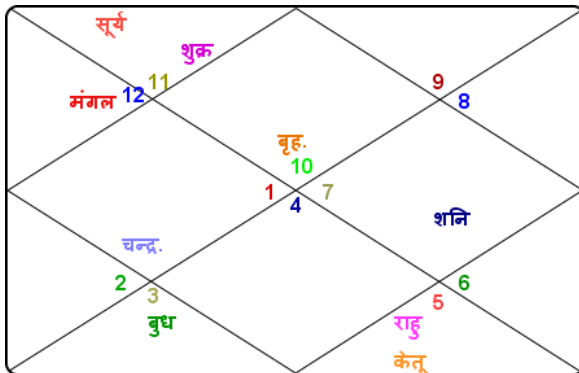
षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के अटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)



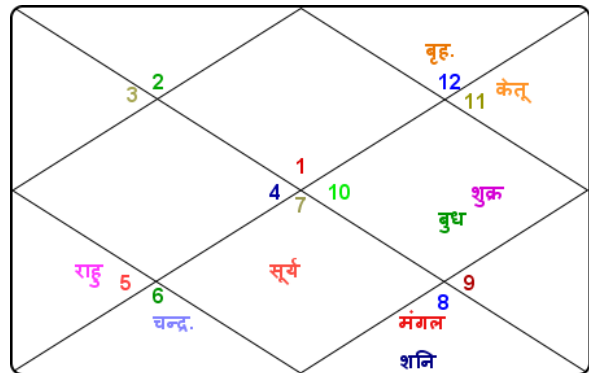
विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतरात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चतुर्विंशांश कुण्डली (डी 24)



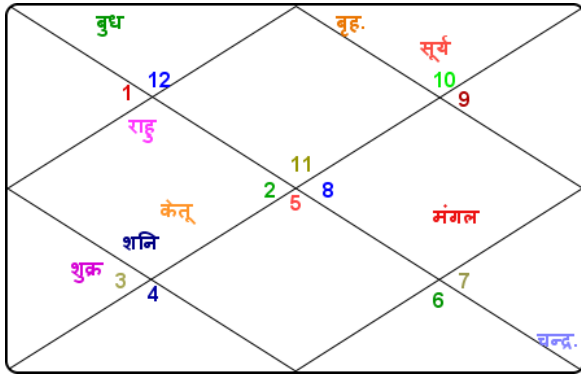
चतुर्विंशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)



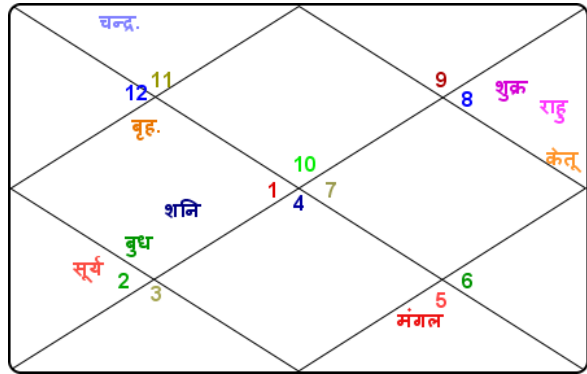
सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

त्रिंशत्श कुण्डली (डी 30)



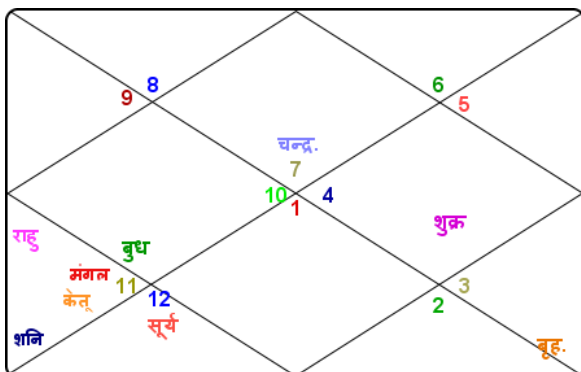
त्रिंशत्श कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)



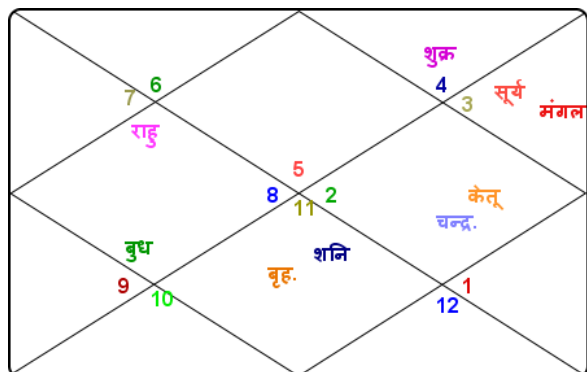
खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

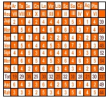


अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)



षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।



सर्वाष्टकवर्ग (337)

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI
♄	शनि	5	3	3	5	3	3	3	1	3	3	3	4	39
♃	बृहस्पति	6	4	5	5	4	5	6	3	6	3	3	6	56
♂	मंगल	5	3	3	2	2	3	2	4	5	3	2	5	39
☉	सूर्य	5	4	3	3	3	4	3	5	4	5	3	6	48
♀	शुक्र	3	5	4	3	4	6	3	3	5	5	6	5	52
♁	बुध	5	4	6	3	2	5	3	7	7	3	1	8	54
☾	चन्द्रमा	7	5	1	4	4	3	3	6	5	3	5	3	49
	योग	36	28	25	25	22	29	23	29	35	25	23	37	337

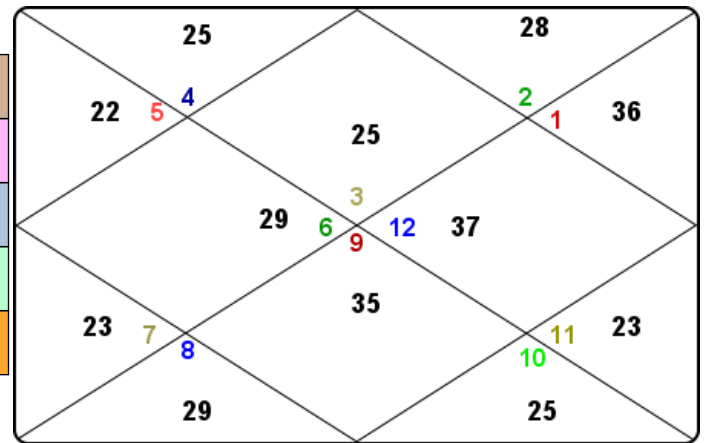
ग्रहों के बल का मूल्यांकन

- ग्रहों के बल का मूल्यांकन

- घटनाओं की भविष्यवाणी

- अनुकूल समय की पहचान

- उपाचारीय ज्योतिष



सर्वाष्टकवर्ग योग

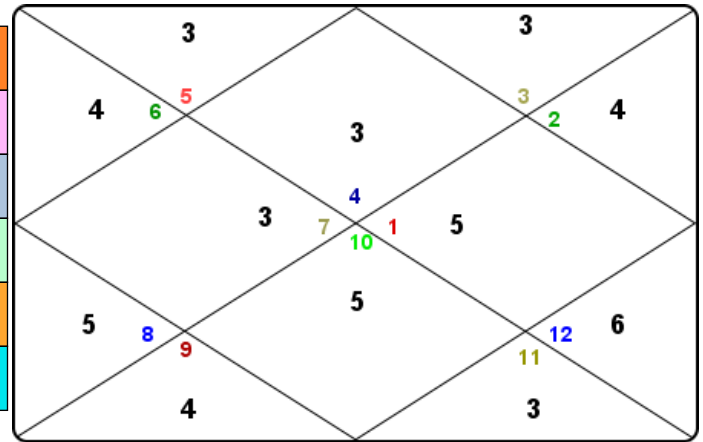
काहल योग : आपकी जन्म कुण्डली के सर्वाष्टक वर्ग के तीसरे भाग (नौवें से बारहवें भाव राशि तक) में बहुत अधिक शुभ बिन्दु हैं। इस कारण आपकी कुण्डली में काहल योग है। आप अपने जीवन के पहले चरण (लगभग 24 वर्ष तक) में कम, दूसरे चरण (24 से 48 वर्ष तक) अधिक और तीसरे चरण (लगभग 48 से 72 वर्ष) में सबसे अधिक सुख प्राप्त करेंगे।

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♃	शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
♄	बृहस्पति	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
♂	मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
☉	सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
♁	शुक्र	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	3
♅	बुध	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	7
☾	चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
AC	लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
	योग	5	4	3	3	3	4	3	5	4	5	3	6	48

सूर्य का कारकत्व

- आत्मा एवं स्व
- अधिकार और नेतृत्व
- स्वास्थ्य और जीवन शक्ति
- पिता और पितातुल्य ब्यक्ति
- कैरियर और सफलता

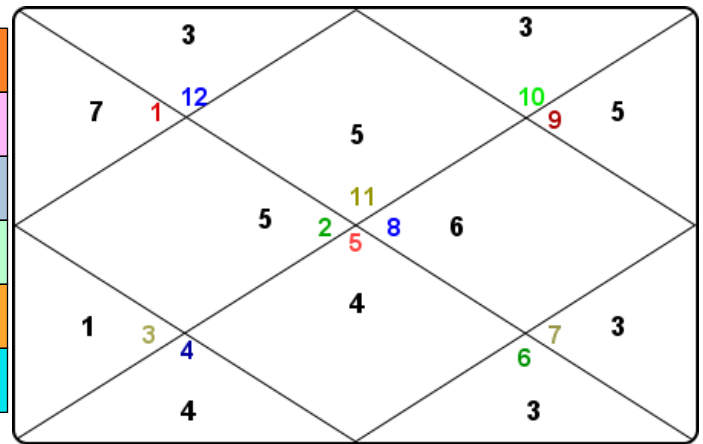


चन्द्रमा भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♃	शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
♄	बृहस्पति	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
♂	मंगल	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	7
☉	सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6
♁	शुक्र	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	7
♂	बुध	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	8
☾	चन्द्रमा	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
AC	लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
	योग	7	5	1	4	4	3	3	6	5	3	5	3	49

चन्द्रमा का कारकत्व

- मन और भावनाएँ
- माँ और मातातुल्य स्त्री
- घर और पारिवारिक जीवन
- कल्पना और रचनात्मकता
- विकास और पोषण

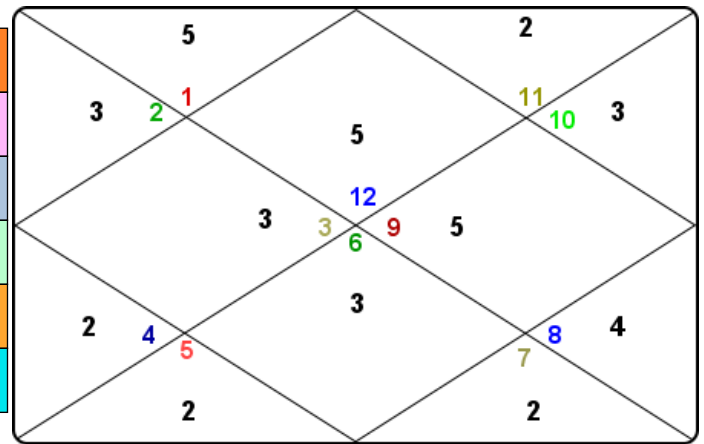


मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	7
♁	बृहस्पति	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	4
♂	मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
☉	सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	5
♂	शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	4
♃	बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	4
☾	चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
AC	लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
	योग	5	3	3	2	2	3	2	4	5	3	2	5	39

मंगल का कारकत्व

- ऊर्जा और क्रिया
- जुनून और संचालन
- आक्रामकता और संघर्ष
- नेतृत्व और उद्यमशीलता
- अभियांत्रिकी और तकनीकी कौशल

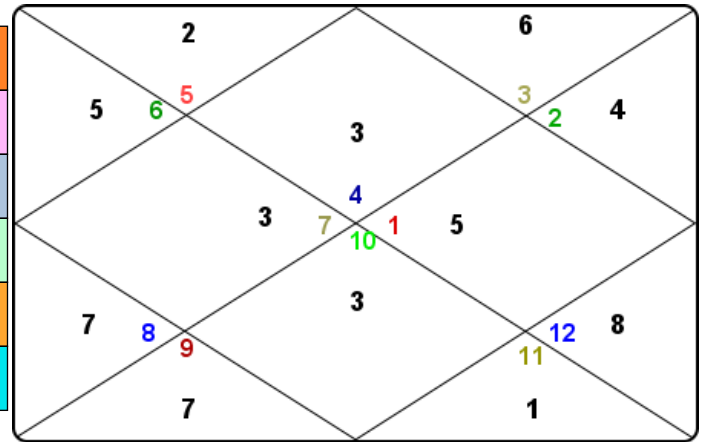


बुध भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	8
♅	बृहस्पति	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
♁	मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
☉	सूर्य	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	5
♂	शुक्र	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	8
♆	बुध	1	1	1	1	0	1	0	1	1	0	0	1	8
☾	चन्द्रमा	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	6
AC	लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
	योग	5	4	6	3	2	5	3	7	7	3	1	8	54

बुध का कारकत्व

- बुद्धि और संचार
- वाणिज्य और व्यवसाय
- अधिगम और शिक्षा
- यात्रा और संचालन
- रचनात्मकता और कला

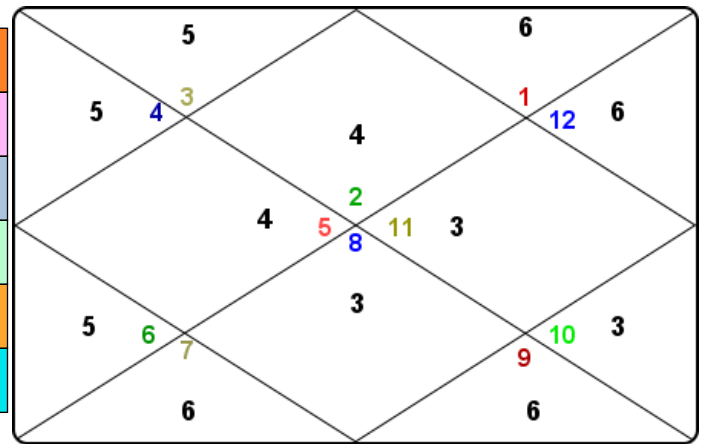


बृहस्पति भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♃	शनि	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	4
♃	बृहस्पति	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	8
♂	मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
☉	सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
♀	शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
♁	बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	8
☾	चन्द्रमा	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
AC	लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
	योग	6	4	5	5	4	5	6	3	6	3	3	6	56

बृहस्पति का कारकत्व

- बुद्धि और ज्ञान
- विकास और विस्तार
- नेतृत्व और अधिकार
- संतान और परिवार
- आध्यात्मिकता और धर्म

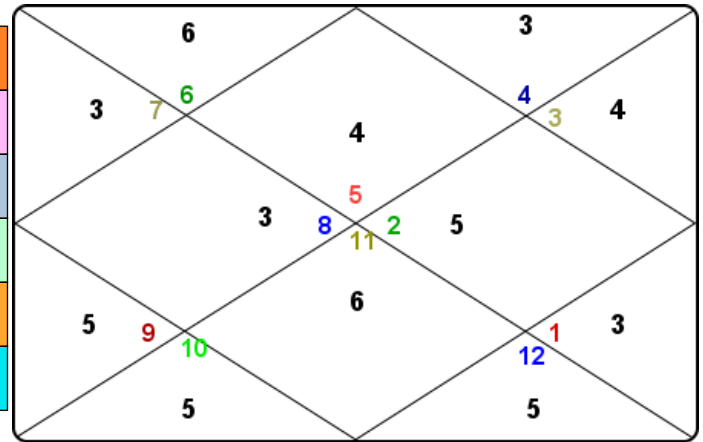


शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	7
♁	बृहस्पति	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	5
♂	मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
☉	सूर्य	0	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	3
♀	शुक्र	1	1	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	9
♃	बुध	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	5
☾	चन्द्रमा	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
AC	लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
	योग	3	5	4	3	4	6	3	3	5	5	6	5	52

शुक्र का कारकत्व

- प्रेम और रोमांच
- विवाह और साझेदारी
- कला और सौंदर्यशास्त्र
- विलासिता और सुख-सुविधा
- वित्त और धन

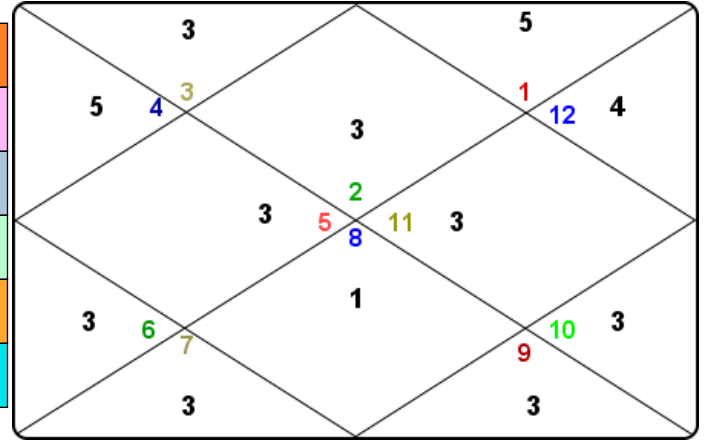


शनि भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
♁	बृहस्पति	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	4
♂	मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
☉	सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
♃	शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	3
♅	बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
☾	चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
AC	लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
	योग	5	3	3	5	3	3	3	1	3	3	3	4	39

शनि का कारकत्व

- कठिन परिश्रम और अनुशासन
- बाधाएं और चुनौतियां
- समय और कर्म
- अधिकार और नेतृत्व
- आध्यात्मिकता और वैराग्य

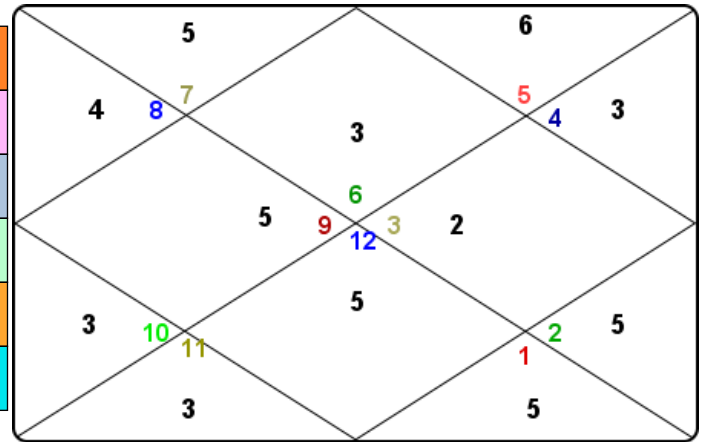


राहु भिन्नाष्टक वर्ग

	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
	भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
♄	शनि	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
♁	बृहस्पति	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
♂	मंगल	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
☉	सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	6
♂	शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	7
♃	बुध	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	7
☾	चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	5
AC	लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
	योग	5	5	2	3	6	3	5	4	5	3	3	5	49

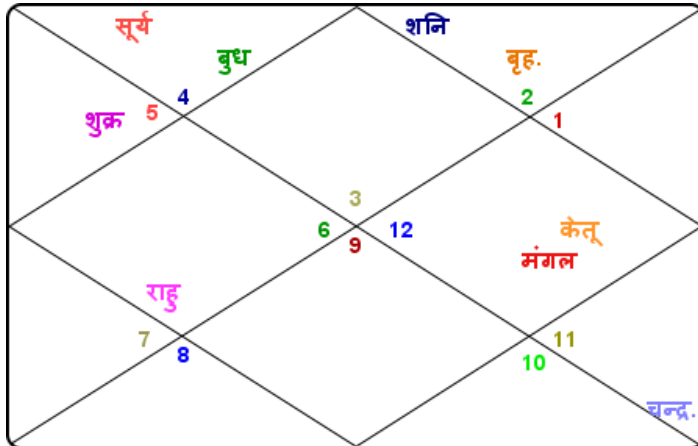
राहु का कारकत्व

- आकांक्षा और सनक
- महत्वाकांक्षा और सफलता
- भ्रम और धोखा
- विदेश भूमि और यात्रा
- आध्यात्मिकता और प्रबोधन

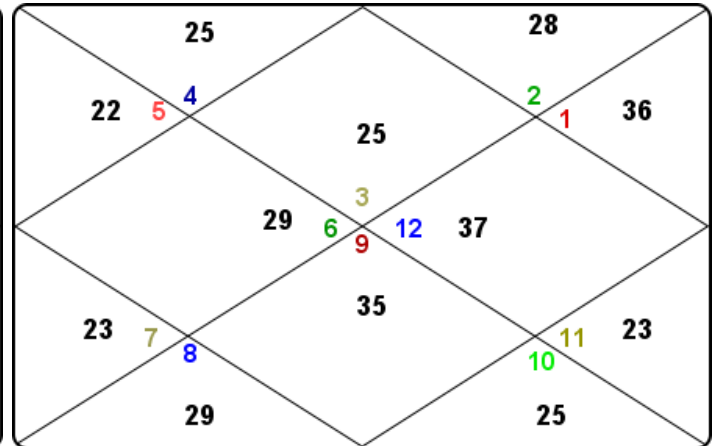


सर्वाष्टक वर्ग के महत्वपूर्ण बिन्दु

लग्न कुण्डली



सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली



तत्व चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	93	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	82	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	71	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	91	उत्तर

(विशेष - सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर)। अगर दोनो भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उप०, दप०, उप० और दप०) होगी।)

भुवन चक्र

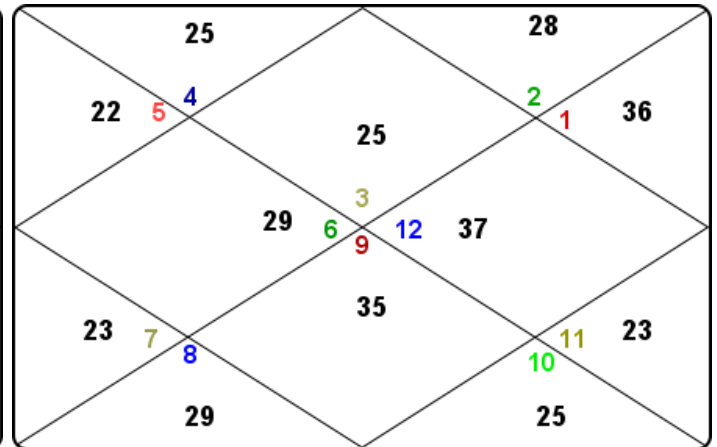
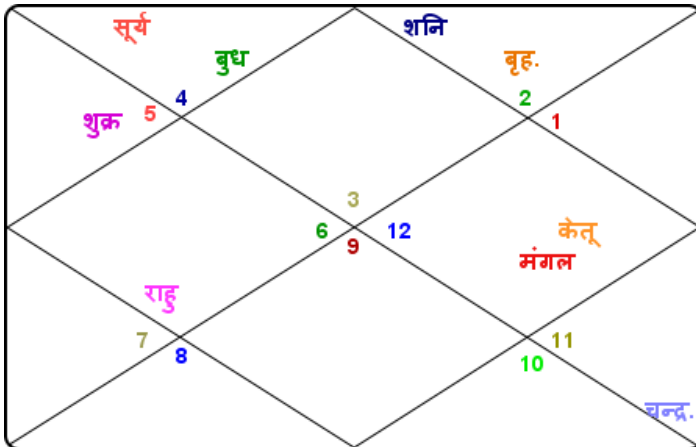
सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव-राशि	112.33	126	मेहनत और लगन
पनफरा भाव-राशि	112.33	109	आर्थिक स्थिति
अपोक्लिम् भाव-राशि	112.33	102	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	सर्वाष्टक बिन्दु	पूर्णांक	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	71	बन्धु - बान्धवों से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	91	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	93	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	82	दुर्भाग्य और हानि

लग्न कुण्डली

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली



जीवन के महत्वपूर्ण कालखण्डों का अवलोकन

भाग	समयावधि		राशि	स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
1st	0 - 24 Years	♈	मिथुन	25	101	खराब
		♋	कर्क	25		
		♌	सिंह	22		
		♍	कन्या	29		
2nd	25 - 48 Years	♎	तुला	23	112	अच्छा
		♏	वृश्चिक	29		
		♐	धनु	35		
		♑	मकर	25		
3rd	> 48 Years	♒	कुम्भ	23	124	असाधारण
		♓	मीन	37		
		♈	मेष	36		
		♉	वृष	28		
1 - 105			106 - 118		> 118	
खराब			अच्छा		असाधारण	

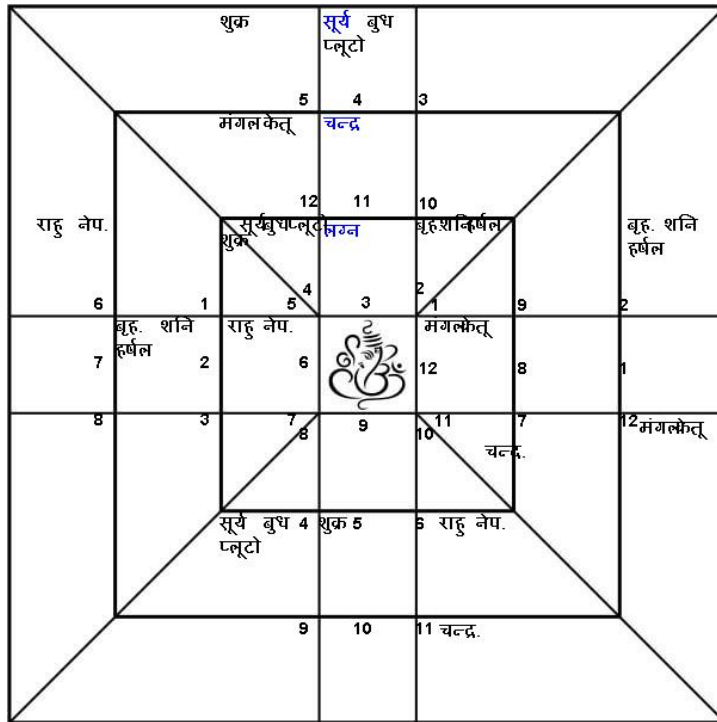
कष्ट तुल्य भाव

भाव		राशि	स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
6	♏	वृश्चिक	29	82	< 84 Good
8	♑	मकर	25		
12	♉	वृष	28		> 84 Not Good



सुदर्शन चक्र

वैदिक ज्योतिष में सुदर्शन चक्र एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो किसी व्यक्ति के जीवन के तीन प्राथमिक पहलुओं, सूर्य (आत्मा), चंद्रमा (मन), और लग्न (शरीर) का प्रतिनिधित्व करने वाला एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह जन्म कुंडली के एकीकृत विश्लेषण की अनुमति देता है, सटीक भविष्यवाणियों और व्यापक समझ में सहायता प्रदान करता है। यह तीन अलग-अलग दृष्टिकोण से गोचर का विश्लेषण करके घटनाओं के समय निर्धारण में भी मदद करता है। अंत में, यह समय अवधि की समग्र गुणवत्ता और किसी व्यक्ति के जीवन पर उनके प्रभावों को प्रकट करता है।



सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii) सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेंगे।

यदि केवल शुभ ग्रहों (बृहस्पति, शुक बुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशी से भरा होगा और मांगलिक कार्य होंगे। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सूर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।



षडबल और भावबल

षडबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
उच्च बल	25.4	37.58	40.82	39.67	45.94	11.16	4.87
सप्त वर्ग बल	86.25	78.75	135	45	86.25	91.88	131.25
युग्म अयुग्म बल	15	15	15	0	0	15	15
केन्द्रादी बल	30	15	60	30	15	15	15
ट्रेक्कन बल	0	15	0	15	0	15	0
स्थान बल	156.65	161.33	250.82	129.67	147.19	148.03	166.12
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	94.94	121.3	261.27	78.59	89.21	111.3	173.04
दिग बल	9.46	1.19	48.88	47.67	55.26	59.55	10.8
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	27.04	2.37	162.94	136.21	157.9	119.11	36.01
नतोन्नत बल	50.92	9	9	50.92	60	50.92	9
पक्ष बल	10.65	49.35	10.65	10.65	49.35	49.35	10.65
त्रिभाग बल	0	0	60	0	60	0	0
वर्ष बल	0	0	0	0	15	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
दिन बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	49.31	35.07	38.71	52.63	58.04	36.17	4.9
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
काल बल	155.88	93.42	118.36	114.19	242.39	136.44	114.54
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	139.18	93.42	176.66	101.96	216.42	136.44	170.96
चेष्टा बल	49.31	49.35	15	0	30	45	30
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	98.62	164.51	37.5	0	60	150	75
नैसर्गिक बल	60	51.43	17.14	25.71	34.29	42.86	8.57
द्रिक बल	-27.75	4.52	9.77	-30.32	-10.21	-10.93	-2.21
कुल षडबल	403.55	361.24	459.98	286.92	498.91	420.95	327.83
षडबल (रूप में)	6.73	6.02	7.67	4.78	8.32	7.02	5.46
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछित अंश	103.47	100.35	153.33	68.32	127.93	127.56	109.28
तुलनात्मक स्थिति	4	5	2	7	1	3	6
इष्ट फल	33.58	43.07	24.74	0	37.12	22.41	12.09
कष्ट फल	26.42	16.93	35.26	60	22.88	37.59	47.91
दिप्ति बल	100	49.35	39.42	20.98	20.33	37.95	26.39

भावबल

भाव संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव राशि	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेघ	वृष
भावाधिपति बल	286.92	361.24	361.24	403.55	286.92	459.98	498.91	327.83	327.83	327.83	498.91	420.95
भाव दिग्बल	60	40	10	30	20	50	0	40	20	0	50	40
भाव द्विष्टिबल	-3.82	-14.87	-16.1	-3.5	10.83	-21.04	-16.76	-11.59	8.25	9.53	5.25	3.64
भावबल योग	343.1	386.37	355.14	430.05	317.75	488.94	482.16	356.24	356.08	337.36	554.16	464.59
भावबल (रूप में)	5.72	6.44	5.92	7.17	5.3	8.15	8.04	5.94	5.93	5.62	9.24	7.74
तुलनात्मक स्थिति	10	6	9	5	12	2	3	7	8	11	1	4



विंशोत्तरी दशा (1)

बृहस्पति (9.0 व.1.0 म.11 द.)

दशा बैलेंस

N.C.Lahiri (023:02:29)

Ayanamsha

बृहस्पति (16 वर्ष) 10/08/1941 To 19/09/1950			शनि (19 वर्ष) 19/09/1950 To 19/09/1969			बुध (17 वर्ष) 19/09/1969 To 19/09/1986		
बारहवें भाव	वृष राशि	शत्रु संबन्ध	बारहवें भाव	वृष राशि	मित्र संबन्ध	दूसरे भाव	कर्क राशि	शत्रु संबन्ध
विशेष	रोहिणी (4) नक्षत्र	7 , 10 भावपति	विशेष	कृतिका (3) नक्षत्र	8 , 9 भावपति	विशेष	पुष्य (4) नक्षत्र	1 , 4 भावपति
बृहस्पति	-----	-----	शनि	22-09-1953	09.11	बुध	15-02-1972	28.11
शनि	-----	-----	बुध	01-06-1956	12.12	केतु	12-02-1973	30.52
बुध	26-08-1941	00.00	केतु	11-07-1957	14.81	शुक्र	13-12-1975	31.51
केतु	02-08-1942	00.04	शुक्र	10-09-1960	15.92	सूर्य	19-10-1976	34.34
शुक्र	02-04-1945	00.98	सूर्य	23-08-1961	19.09	चन्द्रमा	21-03-1978	35.19
सूर्य	19-01-1946	03.64	चन्द्रमा	24-03-1963	20.04	मंगल	18-03-1979	36.61
चन्द्रमा	21-05-1947	04.44	मंगल	02-05-1964	21.62	राहु	04-10-1981	37.60
मंगल	26-04-1948	05.78	राहु	09-03-1967	22.73	बृहस्पति	10-01-1984	40.15
राहु	19-09-1950	06.71	बृहस्पति	19-09-1969	25.58	शनि	19-09-1986	42.42
केतु (7 वर्ष) 19/09/1986 To 19/09/1993			शुक्र (20 वर्ष) 19/09/1993 To 19/09/2013			सूर्य (6 वर्ष) 19/09/2013 To 19/09/2019		
दसवें भाव	मीन राशि	सम संबन्ध	तीसरे भाव	सिंह राशि	शत्रु संबन्ध	दूसरे भाव	कर्क राशि	मित्र संबन्ध
वक्री विशेष	पूर्वाभाद (4) नक्षत्र	भावपति	स्वनक्षत्र विशेष	पुर्वफाल्गु (4) नक्षत्र	12 , 5 भावपति	विशेष	अश्लेषा (3) नक्षत्र	3 भावपति
केतु	15-02-1987	45.11	शुक्र	19-01-1997	52.11	सूर्य	07-01-2014	72.11
शुक्र	16-04-1988	45.52	सूर्य	19-01-1998	55.44	चन्द्रमा	08-07-2014	72.41
सूर्य	22-08-1988	46.69	चन्द्रमा	19-09-1999	56.44	मंगल	13-11-2014	72.91
चन्द्रमा	24-03-1989	47.04	मंगल	19-11-2000	58.11	राहु	07-10-2015	73.26
मंगल	20-08-1989	47.62	राहु	19-11-2003	59.28	बृहस्पति	26-07-2016	74.16
राहु	07-09-1990	48.03	बृहस्पति	20-07-2006	62.28	शनि	08-07-2017	74.96
बृहस्पति	14-08-1991	49.08	शनि	19-09-2009	64.94	बुध	14-05-2018	75.91
शनि	22-09-1992	50.01	बुध	20-07-2012	68.11	केतु	19-09-2018	76.76
बुध	19-09-1993	51.12	केतु	19-09-2013	70.94	शुक्र	19-09-2019	77.11

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



विंशोत्तरी दशा (2)

चन्द्रमा (10 वर्ष)			मंगल (7 वर्ष)			राहु (18 वर्ष)		
19/09/2019 To 19/09/2029			19/09/2029 To 19/09/2036			19/09/2036 To 19/09/2054		
नौवें भाव	कुम्भ राशि	सम संबन्ध	दसवें भाव	मीन राशि	मित्र संबन्ध	चौथे भाव	कन्या राशि	मित्र संबन्ध
पूर्वाभाद (2)		2	रेवती (3)		11, 6	उत्तरफाल्गु (2)		
विशेष	नक्षत्र	भावपति	विशेष	नक्षत्र	भावपति	विशेष	नक्षत्र	भावपति
चन्द्रमा	20-07-2020	78.11	मंगल	15-02-2030	88.11	राहु	02-06-2039	95.11
मंगल	18-02-2021	78.94	राहु	05-03-2031	88.52	बृहस्पति	26-10-2041	97.81
राहु	20-08-2022	79.53	बृहस्पति	09-02-2032	89.57	शनि	01-09-2044	100.21
बृहस्पति	19-12-2023	81.03	शनि	21-03-2033	90.50	बुध	21-03-2047	103.06
शनि	20-07-2025	82.36	बुध	18-03-2034	91.61	केतु	07-04-2048	105.61
बुध	19-12-2026	83.94	केतु	14-08-2034	92.60	शुक्र	08-04-2051	106.66
केतु	20-07-2027	85.36	शुक्र	14-10-2035	93.01	सूर्य	02-03-2052	109.66
शुक्र	21-03-2029	85.94	सूर्य	18-02-2036	94.18	चन्द्रमा	01-09-2053	110.56
सूर्य	19-09-2029	87.61	चन्द्रमा	19-09-2036	94.53	मंगल	19-09-2054	112.06

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	19:09:2019 (16:52:31)	19:09:2029 (16:52:31)
अन्तरदशा	शनि	19:12:2023 (22:52:31)	20:07:2025 (20:52:31)
प्रत्यन्तरदशा	केतु	10:06:2024 (18:32:56)	14:07:2024 (13:50:56)
सूक्ष्मदशा	सूर्य	18:06:2024 (09:05:29)	20:06:2024 (01:39:23)
प्राणदशा	शनि	19:06:2024 (04:21:36)	19:06:2024 (10:46:58)

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलुओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।



बृहस्पति दशा

(10:08:1941 - 19:09:1950)

बृहस्पति अन्तर			शनि अन्तर			बुध अन्तर		
						(10:08:1941 To 26:08:1941)		
बृहस्पति	-----	--	शनि	-----	--	बुध	-----	--
शनि	-----	--	बुध	-----	--	केतु	-----	--
बुध	-----	--	केतु	-----	--	शुक्र	-----	--
केतु	-----	--	शुक्र	-----	--	सूर्य	-----	--
शुक्र	-----	--	सूर्य	-----	--	चन्द्रमा	-----	--
सूर्य	-----	--	चन्द्रमा	-----	--	मंगल	-----	--
चन्द्रमा	-----	--	मंगल	-----	--	राहु	-----	--
मंगल	-----	--	राहु	-----	--	बृहस्पति	-----	--
राहु	-----	--	बृहस्पति	-----	--	शनि	26-08-1941	00.00
केतु अन्तर			शुक्र अन्तर			सूर्य अन्तर		
(26:08:1941 To 02:08:1942)			(02:08:1942 To 02:04:1945)			(02:04:1945 To 19:01:1946)		
केतु	15-09-1941	00.04	शुक्र	11-01-1943	00.98	सूर्य	16-04-1945	03.64
शुक्र	11-11-1941	00.10	सूर्य	28-02-1943	01.42	चन्द्रमा	11-05-1945	03.68
सूर्य	28-11-1941	00.25	चन्द्रमा	21-05-1943	01.56	मंगल	28-05-1945	03.75
चन्द्रमा	26-12-1941	00.30	मंगल	16-07-1943	01.78	राहु	11-07-1945	03.80
मंगल	15-01-1942	00.38	राहु	09-12-1943	01.93	बृहस्पति	19-08-1945	03.92
राहु	07-03-1942	00.43	बृहस्पति	17-04-1944	02.33	शनि	04-10-1945	04.02
बृहस्पति	21-04-1942	00.57	शनि	19-09-1944	02.69	बुध	14-11-1945	04.15
शनि	14-06-1942	00.70	बुध	04-02-1945	03.11	केतु	01-12-1945	04.26
बुध	02-08-1942	00.85	केतु	02-04-1945	03.49	शुक्र	19-01-1946	04.31
चन्द्रमा अन्तर			मंगल अन्तर			राहु अन्तर		
(19:01:1946 To 21:05:1947)			(21:05:1947 To 26:04:1948)			(26:04:1948 To 19:09:1950)		
चन्द्रमा	28-02-1946	04.44	मंगल	09-06-1947	05.78	राहु	04-09-1948	06.71
मंगल	29-03-1946	04.56	राहु	31-07-1947	05.83	बृहस्पति	30-12-1948	07.07
राहु	10-06-1946	04.63	बृहस्पति	14-09-1947	05.97	शनि	18-05-1949	07.39
बृहस्पति	14-08-1946	04.83	शनि	07-11-1947	06.10	बुध	19-09-1949	07.77
शनि	30-10-1946	05.01	बुध	25-12-1947	06.24	केतु	09-11-1949	08.11
बुध	07-01-1947	05.22	केतु	14-01-1948	06.38	शुक्र	04-04-1950	08.25
केतु	04-02-1947	05.41	शुक्र	11-03-1948	06.43	सूर्य	18-05-1950	08.65
शुक्र	26-04-1947	05.49	सूर्य	28-03-1948	06.59	चन्द्रमा	30-07-1950	08.77
सूर्य	21-05-1947	05.71	चन्द्रमा	26-04-1948	06.63	मंगल	19-09-1950	08.97

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



शनि दशा

(19:09:1950 - 19:09:1969)

शनि अन्तर (19:09:1950 To 22:09:1953)			बुध अन्तर (22:09:1953 To 01:06:1956)			केतु अन्तर (01:06:1956 To 11:07:1957)		
शनि	12-03-1951	09.11	बुध	08-02-1954	12.12	केतु	25-06-1956	14.81
बुध	15-08-1951	09.59	केतु	07-04-1954	12.50	शुक्र	31-08-1956	14.88
केतु	18-10-1951	10.01	शुक्र	17-09-1954	12.66	सूर्य	21-09-1956	15.06
शुक्र	18-04-1952	10.19	सूर्य	06-11-1954	13.11	चन्द्रमा	24-10-1956	15.12
सूर्य	12-06-1952	10.69	चन्द्रमा	26-01-1955	13.24	मंगल	17-11-1956	15.21
चन्द्रमा	12-09-1952	10.84	मंगल	25-03-1955	13.47	राहु	17-01-1957	15.27
मंगल	15-11-1952	11.09	राहु	19-08-1955	13.62	बृहस्पति	12-03-1957	15.44
राहु	29-04-1953	11.27	बृहस्पति	28-12-1955	14.03	शनि	15-05-1957	15.59
बृहस्पति	22-09-1953	11.72	शनि	01-06-1956	14.39	बुध	11-07-1957	15.76
शुक्र अन्तर (11:07:1957 To 10:09:1960)			सूर्य अन्तर (10:09:1960 To 23:08:1961)			चन्द्रमा अन्तर (23:08:1961 To 24:03:1963)		
शुक्र	20-01-1958	15.92	सूर्य	27-09-1960	19.09	चन्द्रमा	10-10-1961	20.04
सूर्य	19-03-1958	16.45	चन्द्रमा	26-10-1960	19.13	मंगल	13-11-1961	20.17
चन्द्रमा	23-06-1958	16.61	मंगल	15-11-1960	19.21	राहु	07-02-1962	20.26
मंगल	29-08-1958	16.87	राहु	07-01-1961	19.27	बृहस्पति	25-04-1962	20.50
राहु	19-02-1959	17.05	बृहस्पति	22-02-1961	19.41	शनि	26-07-1962	20.71
बृहस्पति	23-07-1959	17.53	शनि	18-04-1961	19.54	बुध	16-10-1962	20.96
शनि	22-01-1960	17.95	बुध	06-06-1961	19.69	केतु	19-11-1962	21.18
बुध	04-07-1960	18.45	केतु	26-06-1961	19.82	शुक्र	23-02-1963	21.28
केतु	10-09-1960	18.90	शुक्र	23-08-1961	19.88	सूर्य	24-03-1963	21.54
मंगल अन्तर (24:03:1963 To 02:05:1964)			राहु अन्तर (02:05:1964 To 09:03:1967)			बृहस्पति अन्तर (09:03:1967 To 19:09:1969)		
मंगल	16-04-1963	21.62	राहु	05-10-1964	22.73	बृहस्पति	10-07-1967	25.58
राहु	16-06-1963	21.68	बृहस्पति	21-02-1965	23.16	शनि	03-12-1967	25.92
बृहस्पति	09-08-1963	21.85	शनि	05-08-1965	23.54	बुध	13-04-1968	26.32
शनि	12-10-1963	22.00	बुध	30-12-1965	23.99	केतु	06-06-1968	26.68
बुध	08-12-1963	22.17	केतु	01-03-1966	24.39	शुक्र	07-11-1968	26.82
केतु	01-01-1964	22.33	शुक्र	21-08-1966	24.56	सूर्य	23-12-1968	27.25
शुक्र	09-03-1964	22.40	सूर्य	12-10-1966	25.03	चन्द्रमा	11-03-1969	27.37
सूर्य	29-03-1964	22.58	चन्द्रमा	07-01-1967	25.17	मंगल	04-05-1969	27.58
चन्द्रमा	02-05-1964	22.64	मंगल	09-03-1967	25.41	राहु	19-09-1969	27.73

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



बुध दशा

(19:09:1969 - 19:09:1986)

बुध अन्तर (19:09:1969 To 15:02:1972)			केतु अन्तर (15:02:1972 To 12:02:1973)			शुक्र अन्तर (12:02:1973 To 13:12:1975)		
बुध	22-01-1970	28.11	केतु	08-03-1972	30.52	शुक्र	04-08-1973	31.51
केतु	14-03-1970	28.45	शुक्र	07-05-1972	30.58	सूर्य	24-09-1973	31.98
शुक्र	08-08-1970	28.59	सूर्य	25-05-1972	30.74	चन्द्रमा	19-12-1973	32.13
सूर्य	20-09-1970	28.99	चन्द्रमा	24-06-1972	30.79	मंगल	18-02-1974	32.36
चन्द्रमा	03-12-1970	29.11	मंगल	16-07-1972	30.87	राहु	23-07-1974	32.53
मंगल	23-01-1971	29.32	राहु	08-09-1972	30.93	बृहस्पति	08-12-1974	32.95
राहु	04-06-1971	29.46	बृहस्पति	26-10-1972	31.08	शनि	21-05-1975	33.33
बृहस्पति	29-09-1971	29.82	शनि	23-12-1972	31.21	बुध	14-10-1975	33.78
शनि	15-02-1972	30.14	बुध	12-02-1973	31.37	केतु	13-12-1975	34.18
सूर्य अन्तर (13:12:1975 To 19:10:1976)			चन्द्रमा अन्तर (19:10:1976 To 21:03:1978)			मंगल अन्तर (21:03:1978 To 18:03:1979)		
सूर्य	29-12-1975	34.34	चन्द्रमा	02-12-1976	35.19	मंगल	11-04-1978	36.61
चन्द्रमा	24-01-1976	34.39	मंगल	01-01-1977	35.31	राहु	04-06-1978	36.67
मंगल	11-02-1976	34.46	राहु	19-03-1977	35.40	बृहस्पति	22-07-1978	36.82
राहु	29-03-1976	34.51	बृहस्पति	27-05-1977	35.61	शनि	18-09-1978	36.95
बृहस्पति	09-05-1976	34.64	शनि	17-08-1977	35.80	बुध	08-11-1978	37.11
शनि	27-06-1976	34.75	बुध	30-10-1977	36.02	केतु	29-11-1978	37.25
बुध	10-08-1976	34.88	केतु	29-11-1977	36.22	शुक्र	28-01-1979	37.31
केतु	29-08-1976	35.00	शुक्र	23-02-1978	36.30	सूर्य	15-02-1979	37.47
शुक्र	19-10-1976	35.05	सूर्य	21-03-1978	36.54	चन्द्रमा	18-03-1979	37.52
राहु अन्तर (18:03:1979 To 04:10:1981)			बृहस्पति अन्तर (04:10:1981 To 10:01:1984)			शनि अन्तर (10:01:1984 To 19:09:1986)		
राहु	04-08-1979	37.60	बृहस्पति	23-01-1982	40.15	शनि	14-06-1984	42.42
बृहस्पति	06-12-1979	37.99	शनि	03-06-1982	40.46	बुध	31-10-1984	42.85
शनि	02-05-1980	38.33	बुध	28-09-1982	40.81	केतु	28-12-1984	43.23
बुध	11-09-1980	38.73	केतु	15-11-1982	41.14	शुक्र	10-06-1985	43.38
केतु	05-11-1980	39.09	शुक्र	02-04-1983	41.27	सूर्य	29-07-1985	43.83
शुक्र	09-04-1981	39.24	सूर्य	13-05-1983	41.65	चन्द्रमा	19-10-1985	43.97
सूर्य	26-05-1981	39.66	चन्द्रमा	21-07-1983	41.76	मंगल	15-12-1985	44.19
चन्द्रमा	11-08-1981	39.79	मंगल	08-09-1983	41.95	राहु	11-05-1986	44.35
मंगल	04-10-1981	40.00	राहु	10-01-1984	42.08	बृहस्पति	19-09-1986	44.75

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



केतु दशा

(19:09:1986 - 19:09:1993)

केतु अन्तर (19:09:1986 To 15:02:1987)			शुक्र अन्तर (15:02:1987 To 16:04:1988)			सूर्य अन्तर (16:04:1988 To 22:08:1988)		
केतु	28-09-1986	45.11	शुक्र	27-04-1987	45.52	सूर्य	23-04-1988	46.69
शुक्र	23-10-1986	45.14	सूर्य	19-05-1987	45.71	चन्द्रमा	03-05-1988	46.70
सूर्य	30-10-1986	45.20	चन्द्रमा	23-06-1987	45.77	मंगल	11-05-1988	46.73
चन्द्रमा	12-11-1986	45.22	मंगल	18-07-1987	45.87	राहु	30-05-1988	46.75
मंगल	20-11-1986	45.26	राहु	20-09-1987	45.94	बृहस्पति	16-06-1988	46.81
राहु	13-12-1986	45.28	बृहस्पति	15-11-1987	46.11	शनि	07-07-1988	46.85
बृहस्पति	02-01-1987	45.34	शनि	22-01-1988	46.27	बुध	25-07-1988	46.91
शनि	25-01-1987	45.40	बुध	22-03-1988	46.45	केतु	01-08-1988	46.96
बुध	15-02-1987	45.46	केतु	16-04-1988	46.62	शुक्र	22-08-1988	46.98
चन्द्रमा अन्तर (22:08:1988 To 24:03:1989)			मंगल अन्तर (24:03:1989 To 20:08:1989)			राहु अन्तर (20:08:1989 To 07:09:1990)		
चन्द्रमा	09-09-1988	47.04	मंगल	01-04-1989	47.62	राहु	16-10-1989	48.03
मंगल	22-09-1988	47.08	राहु	24-04-1989	47.64	बृहस्पति	06-12-1989	48.19
राहु	24-10-1988	47.12	बृहस्पति	14-05-1989	47.70	शनि	05-02-1990	48.33
बृहस्पति	21-11-1988	47.21	शनि	06-06-1989	47.76	बुध	31-03-1990	48.49
शनि	25-12-1988	47.28	बुध	27-06-1989	47.82	केतु	23-04-1990	48.64
बुध	24-01-1989	47.38	केतु	06-07-1989	47.88	शुक्र	26-06-1990	48.70
केतु	06-02-1989	47.46	शुक्र	31-07-1989	47.91	सूर्य	15-07-1990	48.88
शुक्र	13-03-1989	47.49	सूर्य	07-08-1989	47.97	चन्द्रमा	16-08-1990	48.93
सूर्य	24-03-1989	47.59	चन्द्रमा	20-08-1989	47.99	मंगल	07-09-1990	49.02
बृहस्पति अन्तर (07:09:1990 To 14:08:1991)			शनि अन्तर (14:08:1991 To 22:09:1992)			बुध अन्तर (22:09:1992 To 19:09:1993)		
बृहस्पति	22-10-1990	49.08	शनि	17-10-1991	50.01	बुध	12-11-1992	51.12
शनि	15-12-1990	49.20	बुध	13-12-1991	50.19	केतु	04-12-1992	51.26
बुध	02-02-1991	49.35	केतु	06-01-1992	50.34	शुक्र	02-02-1993	51.32
केतु	22-02-1991	49.48	शुक्र	13-03-1992	50.41	सूर्य	20-02-1993	51.48
शुक्र	19-04-1991	49.54	सूर्य	03-04-1992	50.59	चन्द्रमा	22-03-1993	51.53
सूर्य	06-05-1991	49.69	चन्द्रमा	06-05-1992	50.65	मंगल	12-04-1993	51.62
चन्द्रमा	04-06-1991	49.74	मंगल	30-05-1992	50.74	राहु	06-06-1993	51.67
मंगल	24-06-1991	49.82	राहु	30-07-1992	50.81	बृहस्पति	24-07-1993	51.82
राहु	14-08-1991	49.87	बृहस्पति	22-09-1992	50.97	शनि	19-09-1993	51.95

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



शुक्र दशा

(19:09:1993 - 19:09:2013)

शुक्र अन्तर (19:09:1993 To 19:01:1997)			सूर्य अन्तर (19:01:1997 To 19:01:1998)			चन्द्रमा अन्तर (19:01:1998 To 19:09:1999)		
शुक्र	10-04-1994	52.11	सूर्य	06-02-1997	55.44	चन्द्रमा	11-03-1998	56.44
सूर्य	10-06-1994	52.67	चन्द्रमा	09-03-1997	55.49	मंगल	15-04-1998	56.58
चन्द्रमा	19-09-1994	52.83	मंगल	30-03-1997	55.58	राहु	15-07-1998	56.68
मंगल	29-11-1994	53.11	राहु	24-05-1997	55.64	बृहस्पति	04-10-1998	56.93
राहु	31-05-1995	53.31	बृहस्पति	11-07-1997	55.79	शनि	09-01-1999	57.15
बृहस्पति	09-11-1995	53.81	शनि	07-09-1997	55.92	बुध	05-04-1999	57.42
शनि	20-05-1996	54.25	बुध	29-10-1997	56.08	केतु	10-05-1999	57.65
बुध	09-11-1996	54.78	केतु	19-11-1997	56.22	शुक्र	20-08-1999	57.75
केतु	19-01-1997	55.25	शुक्र	19-01-1998	56.28	सूर्य	19-09-1999	58.03
मंगल अन्तर (19:09:1999 To 19:11:2000)			राहु अन्तर (19:11:2000 To 19:11:2003)			बृहस्पति अन्तर (19:11:2003 To 20:07:2006)		
मंगल	14-10-1999	58.11	राहु	02-05-2001	59.28	बृहस्पति	28-03-2004	62.28
राहु	17-12-1999	58.18	बृहस्पति	25-09-2001	59.73	शनि	30-08-2004	62.63
बृहस्पति	12-02-2000	58.35	शनि	18-03-2002	60.13	बुध	15-01-2005	63.06
शनि	19-04-2000	58.51	बुध	20-08-2002	60.60	केतु	13-03-2005	63.43
बुध	19-06-2000	58.69	केतु	23-10-2002	61.03	शुक्र	22-08-2005	63.59
केतु	14-07-2000	58.86	शुक्र	23-04-2003	61.20	सूर्य	09-10-2005	64.03
शुक्र	23-09-2000	58.93	सूर्य	17-06-2003	61.70	चन्द्रमा	30-12-2005	64.17
सूर्य	14-10-2000	59.12	चन्द्रमा	16-09-2003	61.85	मंगल	24-02-2006	64.39
चन्द्रमा	19-11-2000	59.18	मंगल	19-11-2003	62.10	राहु	20-07-2006	64.54
शनि अन्तर (20:07:2006 To 19:09:2009)			बुध अन्तर (19:09:2009 To 20:07:2012)			केतु अन्तर (20:07:2012 To 19:09:2013)		
शनि	19-01-2007	64.94	बुध	13-02-2010	68.11	केतु	14-08-2012	70.94
बुध	02-07-2007	65.45	केतु	14-04-2010	68.51	शुक्र	24-10-2012	71.01
केतु	08-09-2007	65.89	शुक्र	03-10-2010	68.68	सूर्य	14-11-2012	71.21
शुक्र	18-03-2008	66.08	सूर्य	24-11-2010	69.15	चन्द्रमा	20-12-2012	71.27
सूर्य	15-05-2008	66.61	चन्द्रमा	18-02-2011	69.29	मंगल	14-01-2013	71.36
चन्द्रमा	20-08-2008	66.77	मंगल	20-04-2011	69.53	राहु	19-03-2013	71.43
मंगल	27-10-2008	67.03	राहु	22-09-2011	69.69	बृहस्पति	14-05-2013	71.61
राहु	18-04-2009	67.21	बृहस्पति	07-02-2012	70.12	शनि	21-07-2013	71.76
बृहस्पति	19-09-2009	67.69	शनि	20-07-2012	70.50	बुध	19-09-2013	71.95

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



सूर्य दशा

(19:09:2013 - 19:09:2019)

सूर्य अन्तर (19:09:2013 To 07:01:2014)			चन्द्रमा अन्तर (07:01:2014 To 08:07:2014)			मंगल अन्तर (08:07:2014 To 13:11:2014)		
सूर्य	25-09-2013	72.11	चन्द्रमा	22-01-2014	72.41	मंगल	16-07-2014	72.91
चन्द्रमा	04-10-2013	72.13	मंगल	02-02-2014	72.45	राहु	04-08-2014	72.93
मंगल	10-10-2013	72.15	राहु	01-03-2014	72.48	बृहस्पति	21-08-2014	72.98
राहु	27-10-2013	72.17	बृहस्पति	25-03-2014	72.56	शनि	10-09-2014	73.03
बृहस्पति	10-11-2013	72.21	शनि	23-04-2014	72.62	बुध	28-09-2014	73.09
शनि	28-11-2013	72.25	बुध	19-05-2014	72.70	केतु	06-10-2014	73.14
बुध	13-12-2013	72.30	केतु	30-05-2014	72.77	शुक्र	27-10-2014	73.16
केतु	19-12-2013	72.34	शुक्र	29-06-2014	72.80	सूर्य	02-11-2014	73.21
शुक्र	07-01-2014	72.36	सूर्य	08-07-2014	72.89	चन्द्रमा	13-11-2014	73.23
राहु अन्तर (13:11:2014 To 07:10:2015)			बृहस्पति अन्तर (07:10:2015 To 26:07:2016)			शनि अन्तर (26:07:2016 To 08:07:2017)		
राहु	01-01-2015	73.26	बृहस्पति	15-11-2015	74.16	शनि	19-09-2016	74.96
बृहस्पति	14-02-2015	73.40	शनि	01-01-2016	74.27	बुध	07-11-2016	75.11
शनि	07-04-2015	73.52	बुध	11-02-2016	74.39	केतु	28-11-2016	75.25
बुध	24-05-2015	73.66	केतु	28-02-2016	74.51	शुक्र	24-01-2017	75.30
केतु	12-06-2015	73.79	शुक्र	17-04-2016	74.55	सूर्य	11-02-2017	75.46
शुक्र	05-08-2015	73.84	सूर्य	02-05-2016	74.69	चन्द्रमा	12-03-2017	75.51
सूर्य	22-08-2015	73.99	चन्द्रमा	26-05-2016	74.73	मंगल	01-04-2017	75.59
चन्द्रमा	18-09-2015	74.03	मंगल	12-06-2016	74.79	राहु	23-05-2017	75.64
मंगल	07-10-2015	74.11	राहु	26-07-2016	74.84	बृहस्पति	08-07-2017	75.78
बुध अन्तर (08:07:2017 To 14:05:2018)			केतु अन्तर (14:05:2018 To 19:09:2018)			शुक्र अन्तर (19:09:2018 To 19:09:2019)		
बुध	21-08-2017	75.91	केतु	22-05-2018	76.76	शुक्र	19-11-2018	77.11
केतु	08-09-2017	76.03	शुक्र	12-06-2018	76.78	सूर्य	07-12-2018	77.28
शुक्र	30-10-2017	76.08	सूर्य	19-06-2018	76.84	चन्द्रमा	07-01-2019	77.33
सूर्य	14-11-2017	76.22	चन्द्रमा	29-06-2018	76.86	मंगल	28-01-2019	77.41
चन्द्रमा	10-12-2017	76.27	मंगल	07-07-2018	76.89	राहु	24-03-2019	77.47
मंगल	28-12-2017	76.34	राहु	26-07-2018	76.91	बृहस्पति	11-05-2019	77.62
राहु	13-02-2018	76.39	बृहस्पति	12-08-2018	76.96	शनि	08-07-2019	77.75
बृहस्पति	26-03-2018	76.51	शनि	01-09-2018	77.01	बुध	29-08-2019	77.91
शनि	14-05-2018	76.63	बुध	19-09-2018	77.06	केतु	19-09-2019	78.05

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



चन्द्रमा दशा

(19:09:2019 - 19:09:2029)

चन्द्रमा अन्तर (19:09:2019 To 20:07:2020)			मंगल अन्तर (20:07:2020 To 18:02:2021)			राहु अन्तर (18:02:2021 To 20:08:2022)		
चन्द्रमा	15-10-2019	78.11	मंगल	01-08-2020	78.94	राहु	11-05-2021	79.53
मंगल	01-11-2019	78.18	राहु	02-09-2020	78.98	बृहस्पति	23-07-2021	79.75
राहु	17-12-2019	78.23	बृहस्पति	01-10-2020	79.07	शनि	18-10-2021	79.95
बृहस्पति	27-01-2020	78.35	शनि	04-11-2020	79.14	बुध	04-01-2022	80.19
शनि	15-03-2020	78.47	बुध	04-12-2020	79.24	केतु	05-02-2022	80.40
बुध	27-04-2020	78.60	केतु	16-12-2020	79.32	शुक्र	07-05-2022	80.49
केतु	15-05-2020	78.72	शुक्र	21-01-2021	79.35	सूर्य	03-06-2022	80.74
शुक्र	05-07-2020	78.76	सूर्य	01-02-2021	79.45	चन्द्रमा	19-07-2022	80.82
सूर्य	20-07-2020	78.90	चन्द्रमा	18-02-2021	79.48	मंगल	20-08-2022	80.94
बृहस्पति अन्तर (20:08:2022 To 19:12:2023)			शनि अन्तर (19:12:2023 To 20:07:2025)			बुध अन्तर (20:07:2025 To 19:12:2026)		
बृहस्पति	24-10-2022	81.03	शनि	20-03-2024	82.36	बुध	02-10-2025	83.94
शनि	09-01-2023	81.21	बुध	10-06-2024	82.61	केतु	01-11-2025	84.15
बुध	19-03-2023	81.42	केतु	14-07-2024	82.84	शुक्र	26-01-2026	84.23
केतु	16-04-2023	81.61	शुक्र	19-10-2024	82.93	सूर्य	21-02-2026	84.46
शुक्र	06-07-2023	81.68	सूर्य	17-11-2024	83.19	चन्द्रमा	05-04-2026	84.53
सूर्य	31-07-2023	81.91	चन्द्रमा	04-01-2025	83.27	मंगल	05-05-2026	84.65
चन्द्रमा	09-09-2023	81.97	मंगल	07-02-2025	83.40	राहु	22-07-2026	84.74
मंगल	07-10-2023	82.08	राहु	04-05-2025	83.50	बृहस्पति	29-09-2026	84.95
राहु	19-12-2023	82.16	बृहस्पति	20-07-2025	83.73	शनि	19-12-2026	85.14
केतु अन्तर (19:12:2026 To 20:07:2027)			शुक्र अन्तर (20:07:2027 To 21:03:2029)			सूर्य अन्तर (21:03:2029 To 19:09:2029)		
केतु	01-01-2027	85.36	शुक्र	30-10-2027	85.94	सूर्य	30-03-2029	87.61
शुक्र	05-02-2027	85.40	सूर्य	29-11-2027	86.22	चन्द्रमा	14-04-2029	87.64
सूर्य	16-02-2027	85.49	चन्द्रमा	19-01-2028	86.31	मंगल	25-04-2029	87.68
चन्द्रमा	06-03-2027	85.52	मंगल	24-02-2028	86.44	राहु	22-05-2029	87.71
मंगल	18-03-2027	85.57	राहु	25-05-2028	86.54	बृहस्पति	15-06-2029	87.78
राहु	19-04-2027	85.60	बृहस्पति	14-08-2028	86.79	शनि	14-07-2029	87.85
बृहस्पति	17-05-2027	85.69	शनि	19-11-2028	87.01	बुध	09-08-2029	87.93
शनि	20-06-2027	85.77	बुध	13-02-2029	87.28	केतु	20-08-2029	88.00
बुध	20-07-2027	85.86	केतु	21-03-2029	87.51	शुक्र	19-09-2029	88.03

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



मंगल दशा

(19:09:2029 - 19:09:2036)

मंगल अन्तर (19:09:2029 To 15:02:2030)			राहु अन्तर (15:02:2030 To 05:03:2031)			बृहस्पति अन्तर (05:03:2031 To 09:02:2032)		
मंगल	28-09-2029	88.11	राहु	14-04-2030	88.52	बृहस्पति	20-04-2031	89.57
राहु	20-10-2029	88.14	बृहस्पति	04-06-2030	88.68	शनि	13-06-2031	89.69
बृहस्पति	09-11-2029	88.20	शनि	04-08-2030	88.82	बुध	31-07-2031	89.84
शनि	03-12-2029	88.25	बुध	27-09-2030	88.98	केतु	20-08-2031	89.97
बुध	24-12-2029	88.32	केतु	19-10-2030	89.13	शुक्र	16-10-2031	90.03
केतु	02-01-2030	88.37	शुक्र	22-12-2030	89.19	सूर्य	02-11-2031	90.18
शुक्र	26-01-2030	88.40	सूर्य	10-01-2031	89.37	चन्द्रमा	30-11-2031	90.23
सूर्य	03-02-2030	88.47	चन्द्रमा	11-02-2031	89.42	मंगल	20-12-2031	90.31
चन्द्रमा	15-02-2030	88.49	मंगल	05-03-2031	89.51	राहु	09-02-2032	90.36
शनि अन्तर (09:02:2032 To 21:03:2033)			बुध अन्तर (21:03:2033 To 18:03:2034)			केतु अन्तर (18:03:2034 To 14:08:2034)		
शनि	14-04-2032	90.50	बुध	11-05-2033	91.61	केतु	26-03-2034	92.60
बुध	10-06-2032	90.68	केतु	01-06-2033	91.75	शुक्र	20-04-2034	92.63
केतु	04-07-2032	90.84	शुक्र	31-07-2033	91.81	सूर्य	28-04-2034	92.69
शुक्र	09-09-2032	90.90	सूर्य	19-08-2033	91.97	चन्द्रमा	10-05-2034	92.72
सूर्य	30-09-2032	91.08	चन्द्रमा	18-09-2033	92.02	मंगल	19-05-2034	92.75
चन्द्रमा	02-11-2032	91.14	मंगल	09-10-2033	92.11	राहु	10-06-2034	92.77
मंगल	26-11-2032	91.23	राहु	02-12-2033	92.16	बृहस्पति	30-06-2034	92.83
राहु	26-01-2033	91.30	बृहस्पति	19-01-2034	92.31	शनि	24-07-2034	92.89
बृहस्पति	21-03-2033	91.46	शनि	18-03-2034	92.45	बुध	14-08-2034	92.95
शुक्र अन्तर (14:08:2034 To 14:10:2035)			सूर्य अन्तर (14:10:2035 To 18:02:2036)			चन्द्रमा अन्तर (18:02:2036 To 19:09:2036)		
शुक्र	24-10-2034	93.01	सूर्य	20-10-2035	94.18	चन्द्रमा	07-03-2036	94.53
सूर्य	14-11-2034	93.21	चन्द्रमा	31-10-2035	94.20	मंगल	20-03-2036	94.58
चन्द्रमा	19-12-2034	93.26	मंगल	07-11-2035	94.22	राहु	21-04-2036	94.61
मंगल	13-01-2035	93.36	राहु	26-11-2035	94.25	बृहस्पति	19-05-2036	94.70
राहु	18-03-2035	93.43	बृहस्पति	13-12-2035	94.30	शनि	22-06-2036	94.78
बृहस्पति	14-05-2035	93.60	शनि	02-01-2036	94.34	बुध	22-07-2036	94.87
शनि	20-07-2035	93.76	बुध	21-01-2036	94.40	केतु	04-08-2036	94.95
बुध	19-09-2035	93.94	केतु	28-01-2036	94.45	शुक्र	08-09-2036	94.98
केतु	14-10-2035	94.11	शुक्र	18-02-2036	94.47	सूर्य	19-09-2036	95.08

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.



राहु दशा

(19:09:2036 - 19:09:2054)

राहु अन्तर (19:09:2036 To 02:06:2039)			बृहस्पति अन्तर (02:06:2039 To 26:10:2041)			शनि अन्तर (26:10:2041 To 01:09:2044)		
राहु	14-02-2037	95.11	बृहस्पति	27-09-2039	97.81	शनि	08-04-2042	100.21
बृहस्पति	25-06-2037	95.52	शनि	12-02-2040	98.13	बुध	03-09-2042	100.66
शनि	28-11-2037	95.88	बुध	16-06-2040	98.51	केतु	02-11-2042	101.07
बुध	17-04-2038	96.30	केतु	06-08-2040	98.85	शुक्र	25-04-2043	101.23
केतु	14-06-2038	96.69	शुक्र	30-12-2040	98.99	सूर्य	16-06-2043	101.71
शुक्र	25-11-2038	96.84	सूर्य	12-02-2041	99.39	चन्द्रमा	11-09-2043	101.85
सूर्य	13-01-2039	97.29	चन्द्रमा	26-04-2041	99.51	मंगल	10-11-2043	102.09
चन्द्रमा	05-04-2039	97.43	मंगल	16-06-2041	99.71	राहु	15-04-2044	102.25
मंगल	02-06-2039	97.65	राहु	26-10-2041	99.85	बृहस्पति	01-09-2044	102.68
बुध अन्तर (01:09:2044 To 21:03:2047)			केतु अन्तर (21:03:2047 To 07:04:2048)			शुक्र अन्तर (07:04:2048 To 08:04:2051)		
बुध	11-01-2045	103.06	केतु	12-04-2047	105.61	शुक्र	07-10-2048	106.66
केतु	06-03-2045	103.42	शुक्र	15-06-2047	105.67	सूर्य	01-12-2048	107.16
शुक्र	08-08-2045	103.57	सूर्य	04-07-2047	105.85	चन्द्रमा	02-03-2049	107.31
सूर्य	24-09-2045	104.00	चन्द्रमा	05-08-2047	105.90	मंगल	05-05-2049	107.56
चन्द्रमा	10-12-2045	104.12	मंगल	27-08-2047	105.99	राहु	17-10-2049	107.74
मंगल	03-02-2046	104.34	राहु	24-10-2047	106.05	बृहस्पति	12-03-2050	108.19
राहु	22-06-2046	104.49	बृहस्पति	14-12-2047	106.21	शनि	01-09-2050	108.59
बृहस्पति	24-10-2046	104.87	शनि	13-02-2048	106.35	बुध	03-02-2051	109.06
शनि	21-03-2047	105.21	बुध	07-04-2048	106.51	केतु	08-04-2051	109.49
सूर्य अन्तर (08:04:2051 To 02:03:2052)			चन्द्रमा अन्तर (02:03:2052 To 01:09:2053)			मंगल अन्तर (01:09:2053 To 19:09:2054)		
सूर्य	24-04-2051	109.66	चन्द्रमा	16-04-2052	110.56	मंगल	23-09-2053	112.06
चन्द्रमा	22-05-2051	109.71	मंगल	18-05-2052	110.69	राहु	20-11-2053	112.12
मंगल	10-06-2051	109.78	राहु	09-08-2052	110.77	बृहस्पति	10-01-2054	112.28
राहु	29-07-2051	109.83	बृहस्पति	21-10-2052	111.00	शनि	12-03-2054	112.42
बृहस्पति	11-09-2051	109.97	शनि	16-01-2053	111.20	बुध	05-05-2054	112.59
शनि	02-11-2051	110.09	बुध	03-04-2053	111.44	केतु	27-05-2054	112.74
बुध	19-12-2051	110.23	केतु	05-05-2053	111.65	शुक्र	30-07-2054	112.80
केतु	07-01-2052	110.36	शुक्र	05-08-2053	111.74	सूर्य	18-08-2054	112.97
शुक्र	02-03-2052	110.41	सूर्य	01-09-2053	111.99	चन्द्रमा	19-09-2054	113.02

Note - All the Dates are indicating Dasha End Date.

विस्तृत पंचागं विवरण

पंचागं ज्योतिष के पांच प्रमुख घटकों का सम्मिश्रण होता है- वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण, जो ज्योतिषियों को जातक के पंचाग फल की गणना करने में सहायता करता है। जातक के जन्म के समय इन पांच कारकों को ध्यान में रखते हुए ज्योतिषी जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाते हुए एक स्पष्ट चित्र बना सकता है।



वृष
संवत्सर



दक्षिण
अयन



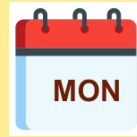
वर्षा
ऋतु



भाद्र
चन्द्र मास



कृष्ण
पक्ष



शनिवार
वार



तृतीया
तिथि



पूर्वाभाद
नक्षत्र



विष्टी
करण



अतिगण्ड
सूर्य सिद्धान्त योग



रात्रि जन्म
दिवा / रात्रि जन्म



मिथुन
द्रेष्काण



ब्राह्मस्पत्य/संवत्सर में जन्म

आपका जन्म वृष संवत्सर में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो परिणाम बिल्कुल भी अनुकूल नहीं हैं। आप हठी प्रकृति और द्वेषपूर्ण स्वभाव वाले हो सकते हैं, आपको संदेहास्पद पृष्ठभूमि और संदिग्ध चरित्र वाले दुष्ट लोगों की संगति पसन्द हो सकती है, आप उनके आदेश पर कुछ नीच कार्य कर सकते हैं और सामान्य लोगों में आलोचना के पात्र हो सकते हैं। आपमें शर्म की भावना का पूर्णतः अभाव हो सकता है, फिर भी आप अपने कामों को बहादूरी के कार्य मानकर उनपर घमण्ड कर सकते हैं। यदि आप वास्तव में ईमानदारी से अपने इस गलत मार्ग को छोड़ने का प्रयास नहीं करते हैं, तो आप अपनी कल्पना से भी पूर्व भारी मुसीबतों में फंस सकते हैं।



अयन में जन्म

आपका जन्म सूर्य के दक्षिणायन (यमयायन) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आप कुछ हद तक दम्भी और हठी प्रकृति या असहिष्णु स्वभाव वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप कठोर हृदय वाले या कपटी हो सकते हैं। आप कृषि कार्यों और/या मवेशियों के पालन से अपनी जीविकोपार्जन कर सकते हैं। साथ ही, आप कुछ ऐसे कार्यों को करने में संलग्न हो सकते हैं, जहां आपके द्वारा किए गए कार्यों की अपेक्षा आपको प्राप्त होने वाला पारिश्रमिक बिल्कुल भी सामंजस्यपूर्ण नहीं हो सकता है।



ऋतु में जन्म

आपका जन्म वर्षा ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आप वीरता और साहस से संपन्न होंगे, आप मार्शल आर्ट में दक्षता प्राप्त करेंगे तथा साहसिक खेलों जैसे घुड़सवारी, तेज दौड़ में भाग लेने में आपको आनन्द आ सकता है। आपकी प्रकृति कफमय और वातमय हो सकती है और आप कभी-कभी जलवायु परिवर्तन के कारण छोटे रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आप बहुत बुद्धिमान, कूटनीतिक और दूरदर्शी भी होंगे, आप सार्वजनिक व्यवहारों और विदेशी मामलों में सफल होंगे, आपकी आय बहुत उत्तम होगी और जीवन की सभी सुख-सुविधाओं का आनन्द लेंगे।

02

चन्द्र मास में जन्म

आपका जन्म भाद्र मास (अगस्त/सितम्बर) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल हैं। आप आनुवांशिक रूप से उत्पन्न किसी भी विकार या पारिस्थितिक कारणों से उत्पन्न किसी भी विषमता से मुक्त रहेंगे। यद्यपि शारीरिक रूप से आप बहुत मजबूत नहीं हो सकते हैं, फिर भी मानसिक रूप से आप बहुत सुदृढ़ होंगे। आपके चित्त में एक विलक्षण स्थिरता विद्यमान होगी, जिससे आप आनन्द या

पीड़ा अथवा सुख या दुःख से बहुत प्रभावित नहीं होंगे। अतः भावनात्मक परेशानी के समय लोग आपके मूल्यवान सलाह और नैतिक सहयोग प्राप्त करने के लिए आपके पास आ सकते हैं। आप काफी धनवान होंगे और जीवन की सभी सुख-सुविधाओं का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप किसी उत्तम कार्य के लिए एक भारी रकम दान में दे सकते हैं। आपका पारिवारिक जीवन शांतिपूर्ण व बहुत खुशहाल होगा।



पक्ष में जन्म

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल नहीं हैं। आपकी शारीरिक संरचना कुछ-कुछ कमजोर हो सकती है और आप आसानी से रोगादि से ग्रसित हो सकती हैं। आप चंचल प्रकृति और अस्थिर स्वभाव वाली हो सकती हैं। आप पर शरारती और/या झगड़ालु होने की छाप लग सकती है। आप बहुत भावुक प्रकृति की हो सकती हैं, चीजों को उनके उचित परिपेक्ष्य में देखे बिना ही आप राई को पहाड़ बना सकती हैं।



वार में जन्म



दिवा / रात्रि में जन्म

आपका जन्म रात्रि के समय में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप कुछ हद तक आलसी हो सकते हैं और आपको दिन में सोने का शौक हो सकता है। आप कुछ-कुछ गोपनीय प्रकृति के हो सकते हैं और आप अपनी कुछ इच्छायें या उद्देश्य गुप्त रखना चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप थोड़े कामुक भी हो सकते हैं—जिसकी वजह से आप अपने जीवनसाथी से दबे हो सकते हैं। आप सक्रिय, उर्जावान, आशावादी और उत्साह से परिपूर्ण होंगे।



सूर्य सिद्धान्त योग में जन्म

सूर्य-सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म अतिगंड योग में हुआ है। यह योग प्रतिकूल श्रेणी से संबंध रखता है। इस योग में जन्म होने के कारण, आप अपने बाल्यकाल में गले से संबंधित अथवा किसी अन्य बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। आपके जन्म के समय, आपके परिवार को हानिकारक परिस्थितियों से गुजरना पड़ा होगा और आपकी माता का स्वास्थ्य नाजुक रहा होगा। आप पाखंडी प्रकृति और धोखेबाज प्रवृत्ति के हो सकते हैं तथा लोग आपके झगड़ालू स्वभाव के कारण आपकी उपेक्षा कर सकते हैं।



तिथि में जन्म

आपका जन्म तृतीया तिथि को हुआ है। आप धनी, अध्ययनशील होंगे और शक्ति, साहस व वीरता से परिपूर्ण होंगे। आप संभवतः एक उच्च पद पर आसीन हो सकते हैं और अधिकारियों से समर्थन व लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आप अत्यधिक यात्राएं कर सकते हैं और विभिन्न स्थानों पर लम्बे समय तक रह भी सकते हैं। आपका अपने छोटे भाई-बहनों, पड़ोसियों, सहकर्मियों या मित्रों से झगड़ा व मतभेद हो सकते हैं। आपको अपना स्थान परिवर्तित करना पड़ सकता है और/या कई बार अपना आवास बदलना पड़ सकता है। अपनी कामुक प्रकृति और इन्द्रिय सुखों की ओर अत्यधिक झुकाव के कारण आप अपनी कल्पना से पूर्व अपनी मान-प्रतिष्ठा को गवां सकते हैं।



करन में जन्म

आपका जन्म विष्टि करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का सातवां करन है। आपकी कुण्डली में यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो कई मामलों में ये संकेत बहुत अनुकूल नहीं हैं। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण नहीं हो सकती है, किन्तु आपकी प्रकृति या झुकाव के कारण यह कुछ हद तक अनैतिक प्रकार का हो सकता है— यह और भी बुरा हो सकता है, यदि आपको अपने हितों के दांव पर लगने का भय हो। आप शक्ति व सहनशीलता से सम्पन्न होंगे, जिससे आप अपने शत्रुओं को बहुत कम या बिना प्रयास किए ही आसानी से पराजित कर सकते हैं। आपकी शारीरिक बनावट सुन्दर और व्यक्तित्व आकर्षक होगा एवं आप कुछ-कुछ अस्थिर या चालबाज प्रकृति के हो सकते हैं, आप कुछ हद तक आलसी भी हो सकते हैं। यदि आप एक महिला हैं, तो संतान के जन्म के समय आप कुछ समस्याओं का सामना कर सकती हैं।



नक्षत्र में जन्म

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में स्थित है। इस नक्षत्र में जन्म लेने के कारण, आप अनेक मामलों में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप नियंत्रित भावनाओं वाले संवेदनशील व्यक्ति होंगे। आप अपने कार्य में कुशल होंगे और आपमें सद्व्यवहार एवं उत्तरदायित्व की विकसित भावना होगी। अपने गर्व व आत्म-सम्मान की भावना के साथ, आप शांतिपूर्वक एक उच्च सिद्धान्त वाले जीवन का अनुसरण करेंगे। आप पुण्यात्मा और धार्मिक होंगे तथा धर्म व ईश्वर में आपको दृढ़ विश्वास होगा। अपने उत्कृष्ट गुणात्मक योग्यता के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। आप एक उपदेशक, शिक्षक, लेखक, सलाहकार, अन्वेषक आदि के रूप में उत्तम कार्य करेंगे या आपका संबंध आयकर, वित्तिय, विदेश व्यापार आदि से हो सकता है।



द्रेष्काण में जन्म

आपकी कुण्डली में, लग्न मिथुन राशि के प्रथम द्रेष्काण में स्थित है— जो स्वयं मिथुन द्रेष्काण के समकक्ष है। इस योग के कारण, आप चौड़ी शारीरिक संरचना के विशिष्ट आकृति और आकर्षक स्वरूप वाले होंगे। आप तीक्ष्ण बुद्धि, हाजिरजवाब, अकाट्य तर्क वाले, जीवंत कल्पनाशील, अवधारक स्मरण

शक्ति एवं विनोदी प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आप ऊँचे आदर्शों, सद्गुणी प्रकृति और गगनचुम्बी महात्वाकांक्षाओं वाले एक विद्वान और ज्ञानी व्यक्ति होंगे। आप विवेकपूर्ण तरीके से बातचीत और व्यवहार करेंगे तथा विभिन्न प्रयासों से धनार्जन करेंगे। शतरंज जैसे आन्तरिक खेलों में आपकी रुचि हो सकती है— जहां तीव्रता से सोचने की क्षमता की प्राथमिक अनिवार्यता है। आप चुनौतीपूर्ण बौद्धिक कार्यों में रत रह सकते हैं— जहां पर खोज और शोध की अति उत्तम संभावना है।



लग्न दर्शन मिथुन

वैदिक ज्योतिष में लग्न भाव को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। एक व्यक्ति के जन्म के समय जो राशि आसमान में उदित होती है, उसे व्यक्ति का लग्न कहा जाता है तथा उस भाव में जो राशि होती है उसे लग्न राशि कहा जाता है। लग्न भाव ज्योतिष के माध्यम से एक व्यक्ति के जीवन के सूक्ष्मतम क्षणों की गणना करने में सहायता करता है। जबकि वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक एवं दैनिक भविष्यवाणी सूर्य राशि व चंद्र राशि के आधार पर किया जाता है।

सामान्य विशेषताएँ

आपकी लग्न राशि मिथुन है, जिसे दो बच्चों के चित्र के द्वारा प्रदर्शित किया गया है— दोहरेपन/द्वैध-अवस्था का प्रतीक। यह राशि वायुतत्व, साधारण या लचीली राशि के रूप में वर्गीकृत की जाती है। कई अन्य प्राकृतिक गुणात्मक विशेषताएँ भी इसमें निहित हैं। यह मानव, दोहरा-शरीर या द्वि-शारीरिक संबंधी, बंजर और हिंसक प्रकृति की राशि है। यह वाणी की भी राशि है।

इस लग्न में जन्म लेने के कारण आप आधारभूत रूप से एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे— संभवतः आपमें कुछ कलात्मक झुकाव होगा और जब यह बौद्धिक शौक के रूप में आएगा तब आप मेहनती बनेंगे। अनोखे प्रकार की प्रतिभा, द्वैतवादी प्रकृति तथा कुछ हद तक उत्तेजक प्रवृत्ति आपकी कुछ विशिष्ट विशेषताएँ होंगी। आप अत्यंत बुद्धिमान और बहुत दयालु, दूसरों के प्रति सुहृदय, वास्तव में न्यायी और निष्पक्ष होंगे। आप बहुत विनम्र, मैत्रीपूर्ण, कौशलपूर्ण और एक विशिष्ट वक्ता होंगे। विभिन्न प्रकार के ज्ञान एवं सूचना के लिए आपमें एक अतृप्त प्यास होगी और आधुनिक तकनीकी विकास आपको पूर्णतः आकर्षित करेंगे। आप खोजी प्रकृति के होंगे और संबंधित विषयों के प्रत्येक पहलु का अन्वेषण करने का प्रयास करेंगे।

आपकी शिक्षा, ज्ञान और बुद्धि आपके पेशे के साथ-साथ आपके जीवन में भी प्रगति करने में आपकी सहायता करेंगे। आप तार्किक और खुले विचारों वाले होंगे। आपकी बुद्धिमत्ता और कूटनीतिक योग्यता आपको आपके विरोधियों को पराजित करने या नष्ट करने में आपकी मदद करेगी। आप अनुशासनप्रिय और सिद्धान्तवादी व्यक्ति होंगे। किन्तु इतने सारे वांछित गुण होने के बावजूद आपमें धैर्य की कमी हो सकती है। आप निरन्तर परिवर्तनशील विचारों एवं बदलते उद्देश्यों वाले हो सकते हैं। आज आप जो कहेंगे या जिसमें विश्वास करेंगे, उसके अगले दिन आपके विचार उसके ठीक विपरीत हो सकते हैं। कई बार आपको देखने वाले लोग काफी भ्रमित या उलझन में हो सकते हैं। तब भी वे आपको हमेशा एक रुचिकर व्यक्ति समझेंगे। आप सभी को प्यार करेंगे।



शारीरिक रूप और ब्यक्तित्व

आप लम्बे, दुबले-पतले और सुन्दर शारीरिक संरचना वाले होंगे। आपका चेहरा आकर्षक होगा और आँखें भावबोधक होंगी, माथा चौड़ा, घुंघराले बाल, भुजाएँ और उंगलियाँ लम्बी होंगी।



आपकी विशेषताएँ

आप रचनात्मक, कलात्मक और कल्पनाशील होंगे। आपमें परिस्थितियों के अनुसार समायोजन करने की योग्यता विद्यमान होगी। अपने हास्यकर प्रकृति और आकर्षक व्यक्तित्व के कारण आप महफिलों की शान होंगे। आप सहानुभूतिपूर्ण होंगे एवं लोगों की हमेशा सहायता करेंगे। आप बुद्धिजीवी और बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न होंगे। आपकी बोलने की क्षमता अद्वितीय होगी।



नौकरी / ब्यवसाय

प्रकाशन, पत्रकारिता, संचार, दुकानदारी और परिवहन के क्षेत्र आपके लिए अनुकूल हो सकते हैं। आप अंतरिक्ष-अनुसंधान, नौपरिवहन, पर्यटन, लघु उद्योग या सूचना प्रौद्योगिकी में अत्यंत उन्नति करने की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक वकील, प्राध्यापक, लेखाकार, सलाहकार या गणितज्ञ भी हो सकते हैं।



नकारात्मक लक्षण

आप चीजों को जानने में अपना समय व्यर्थ में गवां सकते हैं। मित्रों के चुनाव में आपकी पसन्द गलत हो सकती है- जैसाकि वे आपको धोखा दे सकते हैं। आप धोखेबाज हो सकते हैं।



विशेष गुण

- 1- आप बुद्धिमान, कौशलपूर्ण और मौलिक होंगे।
- 2- आप प्रतिभाशाली और अनेक क्षेत्रों का ज्ञान रखने वाले होंगे।
- 3- आप मजाकिया, चतुर और उर्जा से परिपूर्ण होंगे।
- 4- आपको पढ़ने-लिखने का अत्यधिक शौक होगा।



कुण्डली के लिए शुभ/अशुभ ग्रह

- 1- बुध, पहले व चौथे भाव का स्वामी, सर्वाधिक शुभ है।
- 2- चंद्रमा तटस्थ है।
- 3- शुक्र, पांचवें भाव का स्वामी शुभ है।
- 4- सूर्य, मंगल और शनि अशुभ हैं।
- 5- बृहस्पति मारकेश है।



मिथुन लग्न में जन्मे विशिष्ट ब्यक्ति

मुख्य मंत्री- एस. जय ललिता, नेता- प्रमोद महाजन, पूर्व राष्ट्रपति- डॉ. जाकिर हुसैन, पूर्व प्रधान मंत्री- मोरार जी देसाई, वैज्ञानिक- एलबर्ट आइन्स्टीन, अर्थशास्त्री व वित्त मंत्री- पी. चिदम्बरम्।



आपकी राशि कुम्भ

वैदिक ज्योतिष में कुण्डली परीक्षण के लिए सूर्य राशि की अपेक्षा चंद्र राशि को अधिक महत्व दिया जाता है। वैदिक ज्योतिष कहता है कि जन्मकुण्डली में यदि चंद्रमा लग्न की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली है, तो लग्न या लग्न राशि के स्थान पर चंद्र राशि को केन्द्र मानकर अध्ययन करना चाहिए। चंद्र कुण्डली व्यक्ति के अनेक गुप्त रहस्यों को उजागर करती है, जिसे सूर्य कुण्डली के माध्यम से उजागर नहीं किया जा सकता है।



मानसिक अवस्था

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कुम्भ राशि में स्थित है। यह एक सकारात्मक, स्थिर और वायुतत्व की राशि है, जो शनि द्वारा शासित है और घड़े का पानी खाली करते हुए एक परिपक्व मनुष्य की आकृति द्वारा चिह्नित है। सामान्यतः चंद्रमा के साथ इस राशि में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपनी गंभीर प्रकृति और चारित्रिक बल के लिए जाना जाता है। अन्वेषी दिमाग, विचारों में अथाह गहराई, आत्मसातीकरण की शक्ति और अपार धैर्य आपकी विशिष्ट विशेषताएं होंगी। चंद्रमा पर पड़ने वाले अन्य ग्रहों के संशोधनकारी प्रभावों के आधार पर, कुछ विशिष्ट परिवर्तन होने की भी प्रबल संभावना है। एक सीमा तक, यह आपको विषादपूर्ण स्वभाव, एकान्तप्रिय और रात्रि में काम करने वाला व्यक्ति बना सकता है। फिर भी आप दार्शनिक दृष्टिकोण वाले होंगे और उपयोगी कार्यों में संलग्न रहेंगे— जो कि वैज्ञानिक या शिल्प-विज्ञानीय अथवा अन्य उच्च तकनीकी से संबंधित हो सकता है।

आप कुछ हद तक सुस्त हो सकते हैं, किन्तु आप निश्चिन्त होंगे, प्रबल संभावना है कि आप कुछ ऐसा नया व अनूठा लेकर आएंगे— जिसके लिए आपका नाम व यश दूर-दूर तक फैलेगा। आप शान्ति व धैर्य के साथ मूल्य व महत्व जोड़ेंगे एवं ज्ञानी, बुद्धिमान व पवित्र लोगों की संगति की खोज करेंगे। जबकि दूसरी ओर, आप दयालु प्रवृत्ति और कलात्मक झुकाव लिए हुए तीव्र बुद्धि व हंसमुख प्रकृति वाले व्यक्ति होंगे। आप गंभीर व शांत स्वभाव वाले होंगे— पूर्णतः उपद्रवी भावनाओं से रहित। किसी महत्वपूर्ण सभा और सम्मेलन में सम्मिलित होना आप एक नैतिक कर्तव्य व जिम्मेदारी समझेंगे। भौतिक विज्ञान, इंजीनियरिंग, तकनीकी, कृषि और सजावटी-कला जैसे विषय आपको अत्यधिक आकर्षित कर सकते हैं। आप अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हो सकते हैं और यह आपके लिए किसी दूरस्थ अतर्देशीय स्थान अथवा विदेश में भी संभव हो सकता है।

आप ऐसे विषयों की ओर भी अत्यंत आकर्षित हो सकते हैं, जो मूलभूत रूप से असाधारण होंगे, तो भी वास्तविक व अनुभूत होंगे। ज्योतिष, हस्तरेखाशास्त्र, अंकज्योतिष, स्वप्न-फल आदि जैसे तंत्र-मंत्र व रहस्यमयी विषयों में गहन रुचि होने के कारण, आप जहां भी रहेंगे आकर्षण का केन्द्र बने रहेंगे। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे लोग भी हो सकते हैं, जो आपके झुकाव को पक्षपातपूर्ण समझ सकते हैं और आपको सनकी की संज्ञा दे सकते हैं। किन्तु सामान्य लोग आपको विकसित दिमाग, आशावादी प्रकृति, दार्शनिक दृष्टिकोण, सहानुभूतिपूर्ण और लोकोपकारी प्रवृत्ति से परिपूर्ण एक सुयोग्य व्यक्ति मानेंगे।

आप अपने को मात्र एक परिवार में जन्मे या उससे संबंधित, सीमित अधिकार व जिम्मेदारी युक्त व्यक्ति समझने की बजाय, अपने जीवन को किसी प्रकार के उद्देश्य की पूर्ति के रूप में देखेंगे और दूसरों के लिए किए गए अच्छे कार्यों के द्वारा अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में सक्षम होने के आधार अपनी सफलता का आकलन करेंगे। आप किसी विशिष्ट कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर सकते हैं— इसके लिए आप सक्रियता से किसी धर्मार्थ संस्था या मानवतावादी संगठन के लिए कार्य कर सकते हैं।



आपका विशिष्ट ब्यक्तित्व

यह अंतर्दृष्टिपूर्ण रिपोर्ट आपके अद्वितीय चारित्रिक गुणों की गहरी समझ प्रदान करती है, जिससे व्यक्तिगत विकास और आत्म--जागरूकता संभव होती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को जानें --

- (1) आपकी अनुपम शक्तियों, कमजोरियों, और व्यवहारिक प्रवृत्तियों की गहरी समझ बढ़ाने में।
- (2) व्यक्तिगत विकास और आत्म--सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने में, जो आत्मविश्वास और आत्म--सम्मान में वृद्धि करता है।
- (3) अपनी पारस्परिक शैली और भावनात्मक आवश्यकताओं को समझकर संबंधों और संवाद को बेहतर बनाने में।
- (4) आपकी वास्तविक प्रेरणाओं और जीवन के उद्देश्य का पता लगाने में, जो आपको संतोषजनक और असली जीवन पथ की ओर मार्गदर्शन करता है।
- (5) अपने व्यक्तिगत और पेशेवर लक्ष्यों को अपनी प्राकृतिक प्रतिभाओं और क्षमताओं के साथ समन्वित करने में, जो सफलता और संतुष्टि सुनिश्चित करता है।
- (6) आपको अपने अद्वितीय गुणों को गले लगाने और सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाने में, जो अंततः आत्म--स्वीकृति और खुशी की ओर ले जाता है।



आपके आंतरिक संसार की एक झलक : आपका अद्वितीय ब्यक्तित्व

आप तीक्ष्ण दिमाग और जिज्ञासु प्रकृति के व्यक्ति हैं। आप नई चीजों के बारे में जानने का आनंद लेते हैं और आपके पास जानकारी को बरकरार रखने की प्रतिभा हो सकती है। आप एक स्वाभाविक संवाददाता हैं और आपको वाद--विवाद या चर्चाओं में सहभागी होना पसंद हो सकता है।

आपके पास प्राकृतिक आकर्षण और करिश्मा है जो आपको बहिर्गामी और सामाजिक बनाता है। आपको लोगों के बीच रहना पसंद है और आप संबंध बनाने में काफी कुशल हो सकते हैं। आपके पास वार्तालाप करने की प्रतिभा है और आप विभिन्न विषयों पर बात करने का आनंद ले सकते हैं।

आपका लचीला और अनुकूल व्यक्तित्व आपको विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम बनाता है। आप परिवर्तन से घबराने वाले नहीं हैं और आप नए या अपरिचित माहौल में काफी सहज महसूस कर सकते हैं। आपके पास विभिन्न रुचियाँ और प्रतिभाएं हो सकती हैं, और आप अपनी खोज में काफी बहुमुखी हो सकते हैं।

कभी--कभी, आप अशांत महसूस कर सकते हैं या आसानी से उब जाते हैं। आपमें बिना पूरी तरह से परिणाम सोचे कार्य करने की प्रवृत्ति हो सकती है। आपको धैर्य की कमी से संघर्ष करना पड़ सकता है या जब चीजें धीरे--धीरे होती हैं तो आप हताश हो सकते हैं।

आप चंचल और मजाकिया अंदाज वाले हैं जो आपको दूसरों में लोकप्रिय बनाता है। आप लोगों को हंसाने का आनंद लेते हैं और संघर्ष या कठिन परिस्थितियों से निपटने के लिए हास्य--विनोद का उपयोग कर सकते हैं। आपके पास लेखन या सार्वजनिक वक्ता की प्राकृतिक प्रतिभा हो सकती है और आप ये कौशल अन्य लोगों का मनोरंजन करने या सूचना देने के लिए उपयोग करने में आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

आपके पास एक तीव्र विश्लेषणात्मक दिमाग है और आप उन चीजों के प्रति काफी संदेही हो सकते हैं जो साबित नहीं की जा सकती। आपमें अनुसंधान करने की प्रतिभा हो सकती है और आप एक विषय को पूरी तरह समझने के लिए इसमें गहराई तक उतरने का आनंद ले सकते हैं। आप काफी विवेकशील हो सकते हैं और आपको चीजों को अंकित मूल्य पर स्वीकारने में संघर्ष करना पड़ सकता है।

कभी--कभी आप अशांति या उबाऊ पन की भावनाओं से संघर्ष कर सकते हैं। चीजों को रूचिकर बनाए रखने के लिए आपमें नए अनुभवों या चुनौतियों की तलाश करने की प्रवृत्ति हो सकती है। आपको वर्तमान क्षण में संतुष्टि पाने और जीवन की साधारण चीजों की सराहना करना सीखने की आवश्यकता हो सकती है।

आपको बुद्धिमान, उत्सुक और सामाजिक होने के लिए जाना जाता है। आप बहुमुखी और अनुकूल व्यक्तित्व वाले हैं और आपके पास विभिन्न रुचियाँ और प्रतिभाएं हो सकती हैं। आप नटखट और हास्यास्पद स्वभाव वाले हैं जो आपको दूसरों के साथ लोकप्रिय बनाता है। आपको कभी--कभी अशांति या आवेग की समस्या हो सकती है, लेकिन आपके पास एक

तीव्र विश्लेषणात्मक दिमाग और अनुसंधान करने की प्रतिभा भी है। आपका प्राकृतिक आकर्षण और करिश्मा आपको दूसरों के साथ सहज संपर्क करने वाला बनाता है।

स्वास्थ्य सुख



मनुष्य के जीवन में सुख-दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस-पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में यदि ग्रहों की दशा को देखकर उपचार के साथ-साथ ज्योतिषिय उपाय भी किया जाय तो संभवतः रोग से निजात शीघ्रता से पाया जा सके।



आपका स्वास्थ्य और आरोग्य

यह आपके स्वास्थ्य और आरोग्य के लिए भविष्यवाणी है, जो आपके विशिष्ट नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, जो आपके उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने और संतुलित जीवन जीने में मदद करती है। इस भविष्यवाणी का महत्व समझें --

- (1) आपकी संभावित स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान करके, जो आपके स्वास्थ्य के सकारात्मक प्रबंधन और समय रहते हस्तक्षेप की अनुमति देती है।
- (2) आपकी अंतर्निहित शक्तियाँ और कमजोरियाँ प्रकट करना, जो आपको शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य का समर्थन करने वाले जीवनशैली की दिशा में मार्गदर्शन करती है।
- (3) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुरूप, व्यक्तिगत आहार और व्यायाम की सिफारिशें देना।
- (4) आपके तनाव प्रबंधन और क्षमता को बढ़ावा देना, जिससे आपका जीवन संतुलित और सार्थक बने।
- (5) लाभप्रद आदतों और दिनचर्याओं पर मार्गदर्शन प्रदान करना, जिससे आप ऊर्जा और दीर्घायु को बनाए रख सकें।
- (6) आपको आपके स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाना, जो अंततः आपको एक खुश, स्वस्थ जीवन की ओर ले जाता है।



शारीरिक स्वास्थ्य और ऊर्जा का स्तर

आपको अपने पाचन तंत्र और लिवर से संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। स्वस्थ, संतुलित आहार का सेवन करना और नियमित व्यायाम करना आपके समग्र शारीरिक स्वास्थ्य और ऊर्जा को बेहतर बना सकता है।



मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक स्थिरता

आपकी संवेदनशील प्रकृति के कारण आपको चिंता और भावनात्मक अस्थिरता का सामना करना पड़ सकता है। रचनात्मक गतिविधियों में सहभागिता और आराम की तकनीकों जैसे कि ध्यान का अभ्यास करना इन भावनाओं को प्रबंधित करने में मदद कर सकता है।



आहार और पोषण की आवश्यकताएं

आपको संतुलित आहार का सेवन करना चाहिए, जिसमें साबूत अनाज, फल, और सब्जियों की पर्याप्त मात्रा हो। आपको स्वस्थ वजन बनाए रखने और पाचन समस्याओं से बचने के लिए संसाधित खाद्य पदार्थों और अधिक चीनी के सेवन से बचना चाहिए।



फिटनेस और व्यायाम

आपको अपनी समग्र फिटनेस को बेहतर बनाने तथा अपने लिवर एवं पाचन तंत्र से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं से बचने के लिए तैराकी, योग, या नियमित चलने जैसी शारीरिक गतिविधियों में भाग लेना चाहिए।



तनाव प्रबंधन और आराम की तकनीकें

आपके लिए गहरी सांस लेने और विजुअलाइजेशन जैसे तनाव प्रबंधन तकनीकों का अभ्यास करना महत्वपूर्ण है। चित्रकला या संगीत बजाने जैसे रचनात्मक रुचियों में भाग लेना भी आराम प्रदान कर सकता है और तनाव को कम कर सकता है।



नींद का पैटर्न और गुणवत्ता

आपको एक नियमित निद्रा की दिनचर्या बनाए रखनी चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि आप पर्याप्त आराम प्राप्त करते हैं। सोने से पहले कैफीन और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से बचना निद्रा की गुणवत्ता को बेहतर बना सकता है।



आध्यात्मिक वृद्धि और आंतरिक सामंजस्य

आपको ध्यान, योग, या आध्यात्मिक समुदाय के साथ संपर्क में रहने जैसी आध्यात्मिक क्रियाओं से लाभ हो सकता है। ये क्रियाएँ आपको आंतरिक शांति और समरसता की खोज में मदद कर सकती हैं।



अच्छे स्वास्थ्य के लिए सुझाव

आपके उत्तम स्वास्थ्य के लिए कुछ सुझाव में संतुलित आहार बनाए रखना, नियमित शारीरिक गतिविधि में भाग लेना, तनाव प्रबंधन तकनीकों का अभ्यास करना, पर्याप्त नींद प्राप्त करना, और अधिक शराब या कैफीन का सेवन करने से बचना शामिल हैं।



अच्छे स्वास्थ्य के उपाय

आपके स्वास्थ्य और आरोग्यता के लिए कुछ उपाय हो सकते हैं जैसे कि हल्दी या करेला जैसे खाद्य पदार्थों का सेवन करना, मूंगा या मोती जैसे रत्न पहनना, और गायत्री मंत्र का उच्चारण करने जैसे अनुष्ठान करना। यह महत्वपूर्ण है कि इन उपचारों को वैज्ञानिक रूप से साबित नहीं किया गया है और इन्हें चिकित्सा सलाह के विकल्प के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

शिक्षा, विद्या और विद्वता



प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम न मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति से विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि कोई अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन का माध्यम बनाने के लिए पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ती हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की दशा में शिक्षा बाधित होती है। इसलिए इन बाधाओं से सचेत रहने के लिए इसके बारे में जानना भी आवश्यक है।



शिक्षा और सीखने की क्षमता

यह भविष्यवाणियां आपकी शिक्षा के लिए हैं, जो आपके विशिष्ट नक्षत्र के आधार पर हैं। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करती है जो आपको शैक्षिक परिदृश्य को समझने और अपने शैक्षिक प्रयासों में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। इस भविष्यवाणी का महत्व समझें -

- (1) आपकी नैसर्गिक शिक्षण शैली, शक्तियाँ और कमजोरियाँ पहचानने में, जिससे आपके शैक्षिक अनुभव सफल और आनंदमय हो सकें।
- (2) अपने शिक्षा संबंधी लक्ष्यों को अपनी प्राकृतिक प्रतिभाओं और क्षमताओं के साथ समन्वित करने में, जिससे पूर्णता और पुरस्कार प्राप्त हो सकें।
- (3) अधिकतम उपयुक्त विषयों और अध्ययन क्षेत्रों का पता लगाने में, जिससे आप अपने चुने हुए क्षेत्र में समृद्ध और उत्कृष्ट हो सकें।
- (4) संभावित चुनौतियों का पता लगाने और आपकी शैक्षिक यात्रा में किसी भी बाधाओं को पार करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने में।
- (5) आपकी प्रेरणा, एकाग्रता और संकल्प को बढ़ावा देने में, जिससे आपका शैक्षिक प्रदर्शन सुधर सके और व्यक्तिगत विकास हो सके।
- (6) आपको अपनी शिक्षा के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाने में, जो अंततः आपको सफलता और संतुष्टि की ओर ले जाता है।



स्वभाविक योग्यता

आपको तीक्ष्ण बुद्धि और जिज्ञासु मन की प्राकृतिक प्रतिभा प्राप्त होती है। आपके पास भाषाओं के प्रति प्राकृतिक विशेषता होती है और आप खुद को व्यक्त करने में उत्तम होते हैं। आप आविष्कारी और रचनात्मक भी होते हैं, जो आपको बहुत सारी रचनात्मकता की आवश्यकता वाले करियर के लिए उपयुक्त बनाते हैं।



अध्ययन की शैली

आपकी फोटोग्राफिक मेमोरी होती है और आप जल्दी से चीजें याद करने में उत्तम होते हैं। आप सिर्फ किताबों से पढ़ने की बजाय हाथों के अनुभवों और व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से सीखना पसंद करते हैं। आपको आध्यात्मिक और दार्शनिक विषयों के प्रति प्राकृतिक रुचि भी होती है।



सर्वोत्तम विषय

कानून, दर्शनशास्त्र, और आध्यात्मिकता से संबंधित विषय आपके लिए उपयुक्त होते हैं। आपका भाषाओं के प्रति प्राकृतिक झुकाव होता है और आप पत्रकारिता, सृजनात्मक लेखन, और अनुवाद जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं। आपकी रचनात्मक क्षमताएं आपको कला के करियर के लिए उपयुक्त बनाती हैं।



विद्याध्ययन का सरल मार्ग

आप उन शैक्षणिक क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं, जिनमें विश्लेषणात्मक क्षमताओं और विस्तार पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। कानून, दर्शन, सामाजिक कार्य, और धार्मिक अध्ययन जैसे क्षेत्र आपके लिए अच्छे विकल्प हो सकते हैं। आप लेखन, पत्रकारिता, या सृजनात्मक कलाओं में भी करियर तलाश कर सकते हैं। इसके अलावा, आप तकनीकी या अनुसंधान के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।



उपाय

पीला पुष्कराज पहनने से बुद्धि को बढ़ावा मिल सकता है और स्मरण शक्ति में सुधार हो सकता है। गायत्री मंत्र का नियमित रूप से जप करने से भी शैक्षिक प्रयासों में सकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं।



विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ

आपको अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने में समस्याएं हो सकती हैं और आप अनिश्चितता से संघर्ष कर सकते हैं। आप तनाव और चिंता के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं, जो आपके शैक्षिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है।



सर्वोत्तम सुझाव

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए, आपको एक कार्यक्रम विकसित करने और एक अनुसूची का पालन करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आप ध्यान और योग का अभ्यास करके तनाव को कम करने और ध्यान केंद्रित करने में लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जटिल कार्यों को छोटे-छोटे, संभालने योग्य हिस्सों में बाँटने से भी आप अपने पथ पर टिके रह सकते हैं और अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय



भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है। ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों को समय रहते जान कर उसके लिए उपाय करे तो संभवतः वह इन बाधाओं को दूर करने में सफल भी हो सकता है।



आपका व्यावसाय, कार्यक्षेत्र और ज०ब प्रोफ़ाइल

यह भविष्यवाणी आपके व्यावसायिक जीवन या करियर के लिए है, जो आपके जन्म नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो आपको व्यावसायिक परिवेश में संचालन करने और करियर में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को निम्नलिखित बातों से समझिए -

- (1) आपकी अन्तर्निहित व्यावसायिक शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करना, आपको सबसे उपयुक्त करियर पथ की ओर मार्गदर्शन करना।
- (2) विभिन्न उद्योगों में सफलता और विकास की आपकी क्षमताओं को उजागर करना, आपके लिए एक पूर्णतः संतोषप्रद व पुरस्कृत व्यावसायिक यात्रा सुनिश्चित करना।
- (3) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुसार, प्रभावशाली संचार, टीमवर्क और नेतृत्व पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करना।
- (4) आपके करियर में संभावित चुनौतियों को उजागर करना और आपके व्यावसायिक जीवन में किसी भी बाधा को दूर करने के उपाय प्रदान करना।
- (5) आपकी निर्णय क्षमता, रचनात्मकता, और अनुकूलन क्षमता को बढ़ावा देना, जो बेहतर प्रदर्शन और नौकरी संतुष्टि प्रदान करेगी।
- (6) आपको सशक्त करना ताकि आप अपने व्यावसाय, काम, या नौकरी के बारे में सूचित निर्णय ले सकें, जो अंततः सफलता और संपूर्णता की ओर ले जाता है।



ज०ब प्रोफ़ाइल

आप ऐसी भूमिकाओं के लिए उपयुक्त हैं जिनमें रचनात्मकता, नवाचार, और स्वतंत्र सोच की आवश्यकता होती है। आप ऐसे कैरियर में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं, जिसमें आपको लीक से हटकर सोचने की आवश्यकता होती है, जैसे कलाकार, डिज़ाइनर, लेखक, या उद्यमी। आप प्रौद्योगिकी या इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में भी काम कर सकते हैं, जहां आप अपनी रचनात्मकता का उपयोग करके जटिल समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।



कार्यक्षेत्र का वातावरण

आपके लिए कार्य वातावरण आमतौर पर रचनात्मक, गतिशील, और तेज गति वाला होता है। आप ऐसे वातावरण में काम करना पसंद करते हैं जो आपको अपनी रचनात्मकता को स्वतंत्रता पूर्वक व्यक्त करने की अनुमति देते हैं और जो आपको बहुत अधिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। आप विज्ञापन एजेंसियों, डिज़ाइन फर्मों, प्रकाशन घरों, या स्टार्ट-अप्स में काम कर सकते हैं।



कौशल और योग्यताएं

अपने करियर में सफल होने के लिए, आपके पास उत्कृष्ट रचनात्मक और समस्या-समाधान कौशल का होना चाहिए। आपको समालोचनात्मक रूप से सोचने, मूलभूत विचारों को उजागर करने, और सौंदर्यात्मकता की गहरी समझ रखने में सक्षम होना चाहिए। आमतौर पर कला, डिज़ाइन, या संचार से संबंधित क्षेत्र में एक डिग्री या डिप्लोमा की आवश्यकता होती है।



कार्य के घंटे

आपके काम का समय काफी हद तक आपकी नौकरी की भूमिका और उद्योग पर आधारित हो सकता है। आपको लंबे समय तक काम करने की आवश्यकता हो सकती है, विशेषकर विज्ञापन या प्रकाशन जैसे उच्च-दबाव वाली भूमिकाओं में। कार्य समय के संदर्भ में, लचीलापन आपके करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।



करियर में उन्नति

जैसे-जैसे आप अधिक अनुभव प्राप्त करेंगे और अपने कौशल व रचनात्मकता को प्रदर्शित करेंगे, आप करियर में स्थिर प्रगति की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठ रचनात्मक या प्रबंधन भूमिकाओं में प्रगति कर सकते हैं, उद्यमी या परामर्शदाता बन सकते हैं, या यहां तक कि अपने स्वयं के व्यापार की शुरुआत कर सकते हैं।



करियर में चुनौतियां

आपके सामने मुख्य चुनौती अपनी रचनात्मक ऊर्जा को बनाए रखना और तनाव से बचने की होती है। आप काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन ढूंढने में संघर्ष कर सकते हैं, और आपके काम में उत्पन्न होने वाली अनिश्चितता का सामना करने में भी चुनौतियाँ हो सकती हैं।



पुरस्कार और सम्मान

आप अपने कठिन परिश्रम और समर्पण के लिए उत्तम प्रतिफल की उम्मीद कर सकते हैं। आप बोनस या प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन प्राप्त कर सकते हैं, और आपका करियर आपको उच्च स्तर की वित्तीय सुरक्षा प्रदान कर सकता है। आप अपने काम में संतुष्टि भी प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि आपका करियर आपको अपने श्रोताओं व ग्राहकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की अनुमति देता है। इसके अतिरिक्त, आप अपने रचनात्मक कार्य या नवाचारी विचारों के लिए पहचान और पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं।

धन - संपत्ति



मनुष्य का जीवन मिलने के बाद उसकी आवश्यकताएं विभिन्न रूप धारण करके उसके समक्ष आ खड़ी होती हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकता जरूर पड़ती है। मनुष्य का वर्तमान हो अथवा भविष्य आर्थिक पक्ष से अधिक प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति का आर्थिक पक्ष सुदृढ़ है तो उसकी अनेक समस्याएं आसानी से दूर हो जाती हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं सबकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ही हो। किसी के पास अपार धन होता है तो कोई धन के अभाव में अपना जीवन बहुत ही कठिनाई में व्यतीत करता है। जीवन में धन से जुड़ी हुई बाधाएं अनेक रूप में आती हैं। यह आवश्यक नहीं कि जिसके पास धनार्जन के अच्छे साधन हो अथवा जिसका व्यापार व आय अधिक हो उसे धन का कभी अभाव नहीं होता, एवं जिसकी आय कम होती है उसे ही धन बाधा का सामना करना पड़ता है। धन संबंधी बाधा तो किसी के भी जीवन में किसी भी स्वरूप में आ सकती है। ऐसी परिस्थिति जब व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो और उसके पास प्रत्यक्ष रूप से धन उपलब्ध न हो तो उसे धन बाधा कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की परिस्थितियां ग्रहों के योग से निर्मित होती हैं। यही कारण है कि एक ही माता-पिता की दो संतान माता-पिता द्वारा समान रूप से धन वितरण करने के बाद भी कोई धनवान व कोई गरीब हो जाती है। इसलिए इन ग्रहों के योग को जानना व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।



आपकी वित्तीय स्थिरता और आर्थिक विकास

यह आपके धन और वित्त के संदर्भ में भविष्यवाणी है, जो आपके नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो आपको वित्तीय परिदृश्य को समझने और आर्थिक सफलता प्राप्त करने में मदद करती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को समझें -

- (1) आपकी नैसर्गिक वित्तीय शक्तियों और कमजोरियों को समझने के लिए, जो आपको सूचित वित्तीय निर्णयों की दिशा में मार्गदर्शन करती है।
- (2) आपके धन सृजन और संचय की संभावनाओं का पता लगाने, जो आपको अपने वित्तीय अवसरों का अधिकतम उपयोग करने का सामर्थ्य प्रदान करती है।
- (3) निवेश के लिए सबसे शुभ समयावधियों की पहचान करने, जो आपके वित्तीय प्रयासों में सफलता और वृद्धि सुनिश्चित करती है।
- (4) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुसार बजट बनाने, बचत, और वित्तीय योजना पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करने।
- (5) संभावित वित्तीय चुनौतियों का पता लगाना और आपके धन संबंधी यात्रा में किसी भी बाधा को दूर करने के उपाय प्रदान करना।
- (6) आपको अपने पैसे और वित्त के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाना, जो अंततः वित्तीय स्थिरता और समृद्धि की दिशा में ले जाता है।



आपकी वित्तीय क्षमता

आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन और वित्तीय स्थिरता अर्जित करने की क्षमता है। आपके पास वित्तीय रणनीतियों की योजना बनाने और कार्यान्वित करने की शानदार क्षमता है और आप बुद्धिमतापूर्ण वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम हैं।



धन और समृद्धि

आपकी वित्तीय यात्रा में कुछ उतार-चढ़ाव हो सकते हैं, लेकिन अपनी बुद्धिमत्ता और परिश्रम से, आप समय के साथ धन संचय करने में सक्षम होंगे। आप विरासत या निवेश के माध्यम से अप्रत्याशित लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं।



वित्तीय लक्षण और विशेषताएं

वित्तीय मामलों और निवेश के संबंध में आप जोखिम लेने वाले प्रवृत्ति के हो सकते हैं। आपकी आवेगपूर्ण व्यय की प्रवृत्ति, वित्तीय कठिनाइयों का कारण बन सकती है। आपके लिए महत्वपूर्ण है कि आप अपने खर्च की आदतों को नियंत्रित करना और बुद्धिमान वित्तीय निर्णय लेना सीखें।



वित्तीय दृष्टिकोण को बेहतर कैसे बनायें ?

आप वित्त और निवेश के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाकर अपने वित्तीय दृष्टिकोण को बेहतर बना सकते हैं। आप वित्तीय सलाहकार के साथ काम करने या वित्तीय योजना बनाने के लिए पाठ्यक्रम लेने पर विचार कर सकते हैं। अच्छा क्रेडिट स्कोर बनाए रखना और अप्रत्याशित वित्तीय खर्च के लिए आपातकालीन कोष बनाना महत्वपूर्ण है।



धन प्रबंधन के सुझाव

अपने धन का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करने के लिए, आपको एक बजट बनाना और इसका अनुसरण करना चाहिए। आपको अपने व्यय पर नज़र रखना चाहिए और अनावश्यक खर्च को कम करने के तरीके ढूँढना चाहिए। अधिक ऋण लेने से बचें और कोशिश करें कि किसी भी मौजूदा ऋण को जितना संभव हो सके जल्दी चुका दें। जोखिम को कम करने के लिए आपके निवेश को विभाजित करना भी महत्वपूर्ण है।



वित्तीय सफलता में सुधार के लिए उपाय

आपकी वित्तीय सफलता को सुधारने के लिए, आप गुरुवार के दिन उपवास, धर्मार्थ दान करना, और विष्णु सहस्रनाम का पाठ करने जैसे कुछ उपायों पर विचार कर सकते हैं।



निवेश की योजनाएं

आपको शेयर, बॉन्ड, और रियल एस्टेट जैसे विभिन्न संपत्ति वर्गों में अपने निवेश को विभाजित करने पर विचार करना चाहिए। किसी भी निवेश निर्णय से पहले शोध करना और वित्तीय पेशेवर से सलाह लेना महत्वपूर्ण है।



दीर्घकालिक वित्तीय वृद्धि के लिए योजनाएं

दीर्घकालिक वित्तीय वृद्धि की योजना बनाने के लिए, आपको वित्तीय लक्ष्य निर्धारित करना और इन्हें प्राप्त करने के लिए एक योजना बनानी चाहिए। इसमें आपके बच्चों के लिए कॉलेज फंड बनाना, सेवानिवृत्ति के लिए बचत करना या व्यापारिक योजना में निवेश करना शामिल हो सकता है। यह महत्वपूर्ण है कि आप अपनी वित्तीय योजना की समीक्षा करें और नियमित रूप से समायोजन करें ताकि आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पथ पर बने रहें।

मकान/आवास सुख



मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह-तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख-शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करने में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार-चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग-अलग होने के कारण सबको अलग-अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।



घर, मकान, या निवास स्थल के लिए सुझाव

ये आपके घर, मकान, या निवास स्थल के लिए भविष्यवाणी हैं, जो आपके नक्षत्र (तारा) के आधार पर तैयार की गई हैं, यह आपके रहन--सहन को ग्रहों के प्रभाव से कैसे प्रभावित करते हैं, इसका पता लगाने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इस 2 से 3 पृष्ठीय विश्लेषण में आपके जन्म नक्षत्र का गहरा अध्ययन किया गया है, जिसमें देखा गया है कि आपके घर का माहौल आपकी सफलता, खुशी, और सामान्य कल्याण कैसे प्रभावित करता है। नक्षत्रों के आधार पर भविष्यवाणी के महत्व को समझें --

- (1). अपनी प्राकृतिक ऊर्जा के साथ समन्वित एक घर बनाने से संतुलित और उत्साहजनक वातावरण बनेगा।
- (2). अपने जीवन लक्ष्यों के साथ अपने घर को समन्वित करके आपको समृद्ध होने और व्यक्तिगत कठिनाइयों को पार करने में सहायता करना।
- (3). आपके घर में संवाद और पारिवारिक संबंधों को सुधारने तथा शांति व सामंजस्य को बढ़ावा देने में मदद करना।
- (4). संभावित समस्याओं की पहचान करने और आपके घर से जुड़ी किसी भी बाधा को दूर करने हेतु समाधान प्रदान करना।
- (5). एक ऐसा माहौल बनाना जो शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा दे, ताकि स्वास्थ्य और कल्याण को अधिकतम किया जा सके।
- (6). ज्योतिषीय और भौगोलिक चर के आधार पर आपके घर का आदर्श स्थान प्रकट करना।
- (7). स्थानान्तरण या नवीनीकरण करने का सबसे शुभ समय बताना, ताकि सुचारु संक्रमण और सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित किया जा सके।
- (8). आवासीय लेआउट, रंग, और इंटीरियर डिजाइन पर व्यक्तिगत सलाह देना, ताकि सकारात्मक प्रभावों को अधिकतम किया जा सके और नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।
- (9). अपने नक्षत्र की विशेषताओं के साथ अपने निवास को मिलान करने से आपका आध्यात्मिक सम्बंध मजबूत होगा।
- (10). आपको ऐसे समझदार चुनाव करने में सक्षम बनाना जो आपकी जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाएं तथा आपको उपलब्धि और संतोष की ओर ले जाएं।



घर, मकान, या निवास स्थल का स्वामित्व

आपका सम्पत्ति या अचल संपत्ति की ओर झुकाव हो सकता है। आप जमीन में निवेश करने या जीवन के पहले चरण में ही एक घर खरीदने में रुचि रख सकते हैं, लेकिन आपको ध्यान देना चाहिए कि आप बहुत अधिक कर्ज में न डूब जाएं या आर्थिक रूप से अपने आपको अधिक न फंसा लें। यह आपके लिए महत्वपूर्ण है कि आप किसी वित्तीय सलाहकार से परामर्श करें और किसी भी प्रमुख अचल संपत्ति खरीददारी से पहले गहरी शोध करें।



इंटीरियर डिजाइन

आपके पास इंटीरियर डिजाइन के मामले में अद्वितीय पसन्द और सौंदर्यबोध हो सकता है। आप साहसी रंगों और शैलियों की ओर आकर्षित हो सकते हैं या आप मिनिमलिस्ट, आधुनिक डिजाइन को प्राथमिकता दे सकते हैं। आपके पास सजावट तथा आरामदायक व आमंत्रणीय रहन--सहन का स्थान बनाने की प्रतिभा हो सकती है।



आपके घर के लिए सही जगह

आपको शांत और सुखद घर का वातावरण रखने की इच्छा हो सकती है। आप शहर के शोर--गुल की भीड़ से दूर, उपनगरीय या ग्रामीण क्षेत्र में रहना पसंद कर सकते हैं। हालांकि, अगर आप शहरी क्षेत्र में रहते हैं, तो आप एक शांत आवासीय पड़ोस या एक शांत सड़क पर स्थित घर की तलाश कर सकते हैं।



परिवार की रहन--सहन की व्यवस्था

आपका परिवार के साथ एक मजबूत संबंध हो सकता है और आप अपने प्रियजनों के साथ या उनके पास रहने को अधिक महत्व दे सकते हैं। आप बहु--पीढ़ी रहन--सहन की व्यवस्था को पसंद कर सकते हैं या आप विस्तारित परिवार के सदस्यों के लिए अलग रहने की जगह वाले घर की तलाश कर सकते हैं।



घर की देखभाल

आप घर के रखरखाव और देखभाल में सतर्क हो सकते हैं। आपके पास घर की मरम्मत के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण हो सकता है और आप पेशेवरों को बुलाने की बजाय स्वयं चीजों को ठिक करना पसंद कर सकते हैं। हालांकि, आपको सतर्क रहना चाहिए कि आप बहुत अधिक कार्यबोझ न ले और जरूरत होने पर कार्य दूसरों को सौंप दें।



घर में सुधार

आपमें एक रचनात्मक प्रवृत्ति हो सकती है और आप अपने घर में सुधार लाने में आनंद उठा सकते हैं। आपके पास दस्तकारी परियोजनाओं की प्रतिभा हो सकती है और आप कुछ सामान्य परिवर्तनों के साथ एक स्थान को रूपान्तरित करने में सक्षम हो सकते हैं। आपको सतर्क रहना चाहिए कि महंगे नवीकरण के चक्कर में ना पड़ें तथा आपको एक बजट तय करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए।



रियल एस्टेट में निवेश

आपके पास अचल संपत्ति निवेश की प्राकृतिक प्रतिभा हो सकती है। आप एक अच्छा सौदा तय करने में सक्षम हो सकते हैं या आपके पास अमूल्य संपत्तियों को खोजने की अद्वितीय क्षमता हो सकती है। हालांकि, आपको सतर्क रहना चाहिए और किसी भी प्रमुख निवेश से पहले जांच--पड़ताल कर लेना चाहिए।



किराए की संपत्तियां

आपको किराए की संपत्तियों में निवेश करने की इच्छा हो सकती है। आपके पास अच्छे किरायेदारों को ढूँढने और संपत्तियों का प्रबंधन करने की प्रतिभा हो सकती है, लेकिन आपको सतर्क रहना चाहिए कि आप बहुत अधिक बोझ न ले और आवश्यकता पड़ने पर संपत्ति प्रबंधक को किराए पर लेना चाहिए।



अच्छे घर/मकान/निवास के लिए युक्तियाँ

- (1). आपको अपने रहन--सहन की जगह को साफ और सुव्यवस्थित रखने को प्राथमिकता देनी चाहिए। यह घर में शांति और संतोष की भावना को बढ़ावा दे सकता है।
- (2). घर में शांतिपूर्ण रंग और सुगंध का उपयोग करने से आराम और शांति को बढ़ावा मिल सकता है। कोमल नीले, हरे और जमीनी रंग विशेष रूप से शांतिदायक हो सकते हैं, जैसे कि लैवेंडर और चंदन की सुगंध।
- (3). प्राकृतिक तत्वों को जैसे कि पौधे, लकड़ी, और पत्थर को शामिल करने से घर में प्रकृति से जुड़ने और जमीन से जुड़े होने की भावना उत्पन्न हो सकती है।
- (4). आपके लिए अपने रहन--सहन स्थल में समुदाय की भावना को बढ़ाने से लाभ हो सकता है। मित्रों और परिवार के साथ मिलने--जुलने की मेजबानी करना या स्थानीय समुदाय समूह में शामिल होना अनुशासन और संबंध की भावना पैदा कर सकता है।
- (5). आपके लिए अपने निवास स्थल में आध्यात्मिक या धार्मिक तत्वों को शामिल करने से लाभ हो सकता है। इसमें एक ध्यान या प्रार्थना स्थल बनाना या महत्वपूर्ण प्रतीकों या स्मारकों की प्रदर्शनी शामिल हो सकती है।



अच्छे घर/मकान/निवास के लिए उपाय

- (1). वास्तुशास्त्र एक प्राचीन भारतीय वास्तुकला और डिज़ाइन का विज्ञान है जो हमें समानुशासित रहन--सहन की जगह बनाने का लक्ष्य देता है। वास्तु पूजा करने से घर को शुद्ध और ऊर्जा से भरा हुआ बनाने में मदद मिल सकती है।
- (2). रत्नों जैसे कि माणिक, पीला पुखराज, या मोती को घर में रखने या पहनने से सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा मिल सकता है और नकारात्मक प्रभावों से बचने में मदद मिल सकती है।
- (3). हिन्दी ज्योतिष में नवग्रह नौ खगोलीय पिण्डों को प्रदर्शित करता है। नवग्रह पूजा करने से घर में संतुलन और समन्वय को बढ़ावा मिल सकता है।
- (4). यंत्र हिंदू धर्म में ध्यान और पूजा के लिए उपयोग किए जाने वाले ज्यामितीय डिज़ाइन होते हैं। श्री यंत्र या वास्तु यंत्र जैसे यंत्रों को घर में रखने से सकारात्मक ऊर्जा और सुरक्षा को बढ़ावा मिल सकता है।
- (5). 'होम' हिंदू धर्म का एक अनुष्ठान है जिसमें देवताओं को आग के माध्यम से आहुति दी

जाती है। घर में होम करने से रहन--सहन की जगह को शुद्ध करने और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

भृगु जन्म पत्रिका

Name - Sample

Date - 10/08/1941

Time - 02:15:00

POB - New delhi (Delhi) India

Longitude - 077:12:00 E

Latitude - 028:36:00 N



Mindsutra Software Technologies
 A-16, Ground Floor Uttam Nagar New Delhi - 110059
 Phone: 011-49043166, 91 9818193410



आपके लिए विस्तृत मार्गदर्शन

आप अपनी बौद्धिक जिज्ञासा, अनुकूलता और मजबूत संचार कौशल के लिए जाने जाते हैं। सुबह की प्रार्थना और अनुष्ठानों में शामिल होने से आपकी ऊर्जा को संचालित करने और दिन के लिए एक सकारात्मक टोन सेट करने में मदद मिल सकती है। यहां आपके लिए कुछ सुझाई गई सुबह की प्रार्थनाएं और अनुष्ठान दिए गए हैं -



सुबह में क्या करें



1 ध्यान और प्राणायाम

मन को शांत करने और अपनी ऊर्जा को संतुलित करने के लिए अपने दिन की शुरुआत ध्यान और प्राणायाम जैसे नाडी शोधन या भ्रामरी से करें।



2 सूर्य नमस्कार

सूर्य के प्रति आभार व्यक्त करने और शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक कल्याण में वृद्धि के लिए प्रतिदिन सूर्य नमस्कार का अभ्यास करें।



3 भगवान गणेश की पूजा कर

चूंकि बुध मिथुन राशि का अधिपति ग्रह है, इसलिए बुध ग्रह के देवता, भगवान गणेश की पूजा करने से स्पष्टता, ज्ञान और प्रयासों में सफलता मिल सकती है। गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें या गणेश गायत्री मंत्र का जाप करें -

ओम एकदंताय विद्महे वक्रतुंडय धीमहि तन्नो दंती प्रचोदयात ॥



4 नवग्रह स्तोत्रम

नवग्रह स्तोत्रम का पाठ नौ ग्रह देवताओं का आशीर्वाद लेने और ग्रहों के किसी भी बुरे प्रभाव को शांत करने के लिए करें।



5 भगवान गणेश की प्रार्थना

विघ्नहर्ता भगवान गणेश से प्रार्थना करें कि आपका दिन निर्विघ्न और सफल रहे। --

वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समाप्रभा ।
निर्विघ्नम कुरु मे देवा सर्व कार्येषु सर्वदा ॥



6 भगवान विष्णु की पूजा करें

ज्ञान और जीविका के अवतार भगवान विष्णु की पूजा करने से आपको लाभ हो सकता है। विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें या विष्णु गायत्री मंत्र का जाप करें -

ओम नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमही तन्नो विष्णु प्रचोदयात ॥



7 योग का अभ्यास करें

शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण में वृद्धि के लिए दैनिक योग अभ्यास करें। सुख्रासन, वृक्षासन और अर्ध मत्स्येन्द्रासन जैसे आसन आपके लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकते हैं।



8 पवित्र ग्रंथों को पढ़ें या सुनें

दिव्य मार्गदर्शन और ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने दिन की शुरुआत भगवद गीता, उपनिषद या ऋग्वेद जैसे पवित्र ग्रंथों के अंशों को पढ़कर या सुनकर करें।



कृतज्ञता का अभ्यास करें

अपने जीवन में सभी आशीर्वादों के लिए ब्रह्मांड को धन्यवाद देते हुए कुछ क्षण कृतज्ञता में बिताएं। इन सुबह की प्रार्थनाओं और अनुष्ठानों को अपनी दिनचर्या में शामिल करने से आपको व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास के लिए अपने सहज गुणों का दोहन करने में मदद मिल सकती है।



वेशभूषा और पहनावा



1 फैंशनेबल व व्यापक

आप ऐसे कपड़ों की शैलियों को पसंद करते हैं जो फैंशनेबल, व्यापक और आपके अनुकूलनीय स्वभाव के अभिव्यंजक हों।



2 चंचल और मजेदार

अद्वितीय पैटर्न, प्रिंट या विवरण वाले कपड़ों का चयन करें जो आपकी चंचल और जिज्ञासु भावना को दर्शाते हैं।



3 हल्का और आरामदायक

ऐसे कपड़े चुनें जो हल्के और आरामदायक हों, जिससे आप स्वतंत्र रूप से घूम सकें और विभिन्न स्थितियों के अनुकूल हो सकें।



रंग



1 पीला

चूंकि मिथुन राशि का स्वामी ग्रह बुध है, इसलिए पीला आपके लिए विशेष रूप से शुभ रंग है। यह बुद्धि, संचार और अनुकूलता का प्रतिनिधित्व करता है।



2 हल्का नीला

यह शांत और ताजगीपूर्ण रंग भी आपके लिए अनुकूल हो सकता है, क्योंकि यह स्पष्टता और खुले विचारों का प्रतीक है।



3 सफ़ेद

सफ़ेद आपके लिए संतुलन और शुद्धता ला सकता है, क्योंकि यह जानकारी को आत्मसात करने और संसाधित करने की आपकी क्षमता को दर्शाता है।



4 बहुरंगा

अपनी बहुमुखी और अनुकूलनीय प्रकृति को दर्शाने के लिए विभिन्न प्रकार के रंगों को अपनाएं।



जीवन शैली



1 बौद्धिक जिज्ञासा

सीखने और नए विषयों की खोज के लिए एक प्यार पैदा करें, क्योंकि आपके पास ज्ञान के लिए एक सहज जिज्ञासा और प्यास है।

2

सक्रिय और सामाजिक

एक सक्रिय जीवन शैली बनाए रखें और सामाजिक गतिविधियों में संलग्न रहें, क्योंकि आप गतिशील और उत्तेजक वातावरण में विकसित होते हैं।

3

संपर्क और संचार

संपर्क के अवसरों को गले लगाएं और दूसरों के साथ संवाद करें, जैसा कि आपमें प्रायः प्राकृतिक संचार कौशल विद्यमान रहता है।

4

विविधता और लचीलापन

अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में विविधता और लचीलेपन की तलाश करें, क्योंकि आप विविध अनुभवों और अवसरों का आनंद लेते हैं।

5

रचनात्मक गतिविधियाँ

रचनात्मक शौक या गतिविधियों में संलग्न रहें जो आपको अपनी बुद्धि और कल्पना को व्यक्त करने में सहायता प्रदान करें।

6

ध्यान व सचेतन

अपने दिमाग को शांत करने और अपनी मानसिक ऊर्जा को संतुलित करने में मदद करने के लिए ध्यान व सचेतन क्रिया का अभ्यास करें।

7

समय प्रबंधन

यह सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी समय प्रबंधन की आदतें विकसित करें कि आप अपने दिन का अधिकतम लाभ उठा सकें और एक संतुलित जीवन शैली बनाए रख सकें।



क्या है कालसर्प योग ?



जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशों के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशों के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव-

- 1- किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
- 2- मानसिक तनाव।
- 3- आत्मविश्वास में कमी।
- 4- स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
- 5- गरीबी और धन की कमी।
- 6- व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
- 7- उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
- 8- मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
- 9- मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
- 10- मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।



मांगलिक दोष (कुज दोष)



मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।

मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।



आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल शुक्र-राशि से आठवें भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूंकि मंगल बृहस्पति की राशि में स्थित है, अतः यह एक अपवाद है- जैसाकि यह दोष स्वतः समाप्त हो जाता है। आपकी कुण्डली में कुज दोष तकनीकी रूप से अनुपस्थित माना जाएगा।



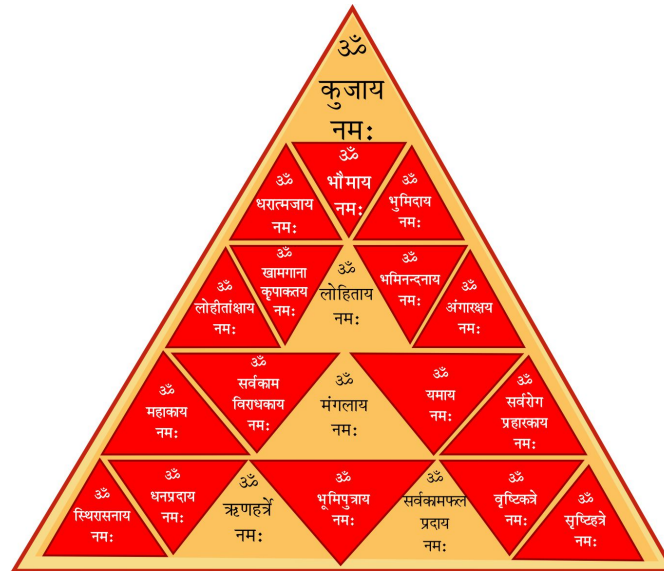
मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक,

मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक-दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।



मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय



मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :-

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

**रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हरिके विपदां शरो हर्षमंगलकारिके ॥
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ॥
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ॥**

केमुद्रम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)



दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवम्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्॥



क्या है केमुद्रम योग ?

आपकी कुण्डली में केमुद्रम योग प्रभावी नहीं है। आपको इस योग से संबंधित कोई उपाय की आवश्यकता नहीं है।





उपाय क्या करें ?

- (1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।
- (2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।
- (3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।
- (4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।
- (5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।
- (6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।
- (7) विधवा औरतों की यथासंभव सहायता करते रहे।
- (8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

सूर्य ग्रह का उपाय



ज्योतिष शास्त्र में सूर्य ग्रह को ग्रहों का राजा माना जाता है। जीवन में मान-सम्मान, नौकरी और समृद्धिशाली जीवन जीने के लिए सूर्य देव की कृपा जरूरी होती है और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सूर्य ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

 <p>बीज मंत्र 1 ॐ सूर्याय नमः Every morning, one should offer water to the Sun and chant this mantra.</p>	 <p>तान्त्रिक मंत्र ॐ हं ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः Om hraam hreem hroum sah suryah namah.</p>
 <p>बीज मंत्र 2 ॐ घृणिः सूर्याय नमः Om Ghrinih Suryah Namah.</p>	 <p>गायत्री मंत्र ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि । तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात् ॥ Om Bhaskaraya Vidmahe Mahatejaya Dhimahi, Tanno Suryah Prachodayat.</p>



व्रत और उपवास

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तान्त्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहुति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।



जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।



स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।



हवन





अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- खरस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी- बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

चन्द्रमा ग्रह का उपाय



कुंडली में चंद्र दोष होने से कलह, मानसिक विकार, माता-पिता की बीमारी, दुर्बलता, धन की कमी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। चंद्रमा मन का कारक ग्रह होता है। कुंडली में चंद्र को मजबूत बनाने के लिए चंद्र ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

 <p>बीज मंत्र 1 ॐ सोमाय नमः This mantra should be chanted every Monday while sitting in front of a Shivalinga.</p>	 <p>तान्त्रिक मंत्र ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः Om shraam shreem shraum sah chandramase namah.</p>
 <p>बीज मंत्र 2 ॐ सों सोमाय नमः Om Som Somaya Namah.</p>	 <p>गायत्री मंत्र ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे मृतात्वाय धीमहि । तन्नोः चंद्रः प्रचोदयात् ॥ Om Ksheeraputraya Vidmahe Mritatvaya Dhimahi, Tannam Chandrah Prachodayat.</p>



व्रत और उपवास

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्रमा के बीज मंत्र या तान्त्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहुति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।



जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।



स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।



हवन





अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी - खिरनी की जड़।

मंगल ग्रह का उपाय



मंगल साहस और पराक्रम का कारक ग्रह है। कुंडली में मंगल के कमजोर होने पर उसके साहस और ऊर्जा में निरंतर कमी रहती है। मंगल को मजबूत करने के लिए मंगल ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

 <p>बीज मंत्र 1 ॐ भौमाय नमः This mantra is chanted for the planet Mars. It should be chanted on Tuesdays.</p>	 <p>तान्त्रिक मंत्र ॐ क्रां क्रीं क्रीं सः भौमाय नमः Om kraam kreem kraum sah bhaumaaya namah.</p>
 <p>बीज मंत्र 2 ॐ अंगारकाय नमः Om Om Angarakaya Namah.</p>	 <p>गायत्री मंत्र ॐ अंगारकाय विद्महे वाणेशाय धीमहि । तन्नोः भौम प्रचोदयात ॥ Om Angarakaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi, Tanno Bhaumah Prachodayat.</p>



व्रत और उपवास

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीवन्तगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तान्त्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहुति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।



जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिह्वा संगमुसी नाग जिह्वा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।



स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता के लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।



हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।





सामग्री- सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।

जड़ी- सौंफ की जड़, नाग जिह्वा, अनन्त मूल।

बुध ग्रह का उपाय



जीवन में तरक्की और प्रसिद्धि पाने के लिए कुंडली में बुध का मजबूत होना आवश्यक है। बौद्धिक नजरिए से सबसे प्रबल ग्रह होता है। कुंडली में बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए बुध ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

 <p>बीज मंत्र 1 ॐ बुधाय नमः This mantra should be chanted every Wednesday. You can chant it in Lord Ganesha's temple.</p>	 <p>तान्त्रिक मंत्र ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः Om braam breem braum sah budhaaya namah.</p>
 <p>बीज मंत्र 2 ॐ बुं बुधाय नमः Om Bum Budhaya Namah.</p>	 <p>गायत्री मंत्र ॐ सौम्यरुपाय विदिमहे वाणेशाय धीमहि । तन्नोः बुधः प्रचोदयात् ॥ Om Saumyarupaya Vidimahe Vaneshaya Dhimahi, Tanno Budhah Prachodayat.</p>



व्रत और उपवास

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तान्त्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बाँटें और खुद भी खाएँ। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।



जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लाएँ। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।



स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।



हवन





अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियाँ मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी- भारंगी की जड़।

बृहस्पति ग्रह का उपाय



वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से धन लाभ, सुख-सुविधा, सौभाग्य, लंबी आयु आदि मिलता है। कुंडली में देवगुरु बृहस्पति की मजबूती के लिए जातकों को गुरु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

 <p>बीज मंत्र 1</p> <p>ॐ बृहस्पतये नमः</p> <p>This mantra should be chanted while sitting in front of a Shivalinga. It should be chanted every Thursday.</p>	 <p>तान्त्रिक मंत्र</p> <p>ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः</p> <p>Om graam greem graum sah gurave namah.</p>
 <p>बीज मंत्र 2</p> <p>ॐ ब्रं बृहस्पतये नमः</p> <p>Om Bram Brihaspataye Namah.</p>	 <p>गायत्री मंत्र</p> <p>ॐ गुरुदेवाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।</p> <p>तन्नोः गुरुः प्रचोदयात ॥</p> <p>Om Gurudevaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi, Tanno Guru Prachodayat.</p>



व्रत और उपवास

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहुति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।



जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।



स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।



हवन





अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी- केले की जड़।

शुक्र ग्रह का उपाय



कुंडली में शुक्र ग्रह के मजबूत होने पर सभी तरह के ऐशो-आराम की सुविधा मिलती है और इसे मजबूत करने के लिए जातकों को शुक्र बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

 <p>बीज मंत्र 1 ॐ शुक्राय नमः This mantra should be chanted every Friday while sitting in front of a Shivalinga.</p>	 <p>तान्त्रिक मंत्र ॐ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः Om draam dreem draum sah shukraaya namah.</p>
 <p>बीज मंत्र 2 ॐ शुं शुक्राय नमः Om Shum Shukraya Namah.</p>	 <p>गायत्री मंत्र ॐ भृगुसुताय विदिमहे दिव्यदेहाय धीमहि । तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात् ॥ Om Bhargusutaya Vidmahe Divyadehaya Dhimahi, Tanno Shukrah Prachodayat.</p>



व्रत और उपवास

शुक्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तान्त्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।



जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।



स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।



हवन





अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- सरपोंखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी- अरंडे की जड़।

शनि ग्रह का उपाय



ज्योतिष में शनि देव को कर्म फलदाता के नाम से जाना जाता है। यदि कुंडली में शनि ग्रह भारी होता है तो जिंदगी में परेशानियां बनी रहती हैं। इन परेशानियों को दूर करने के लिए शनि बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

 <p>बीज मंत्र 1 ॐ शनैश्चराय नमः Every Saturday, sit in front of Lord Shani and chant this mantra.</p>	 <p>तान्त्रिक मंत्र ॐ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः Om praam preem praum sah shanaishcharaaya namah.</p>
 <p>बीज मंत्र 2 ॐ शं शनैश्चराय नमः Om Sham Shanaischaraya Namah.</p>	 <p>गायत्री मंत्र ॐ शिरोरुपाय विदिमहे मृत्युरुपाय धीमहि । तन्नोः सौरिः प्रचोदयात ॥ Om Shirorupaya Vidmahe Mrityurupaya Dhimahi, Tanno Saurih Prachodayat.</p>



व्रत और उपवास

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तान्त्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एवं तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहुति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।



जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।



स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।



हवन





अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
 जड़ी- धतुरे की जड़।

राहु ग्रह का उपाय



राहु एक छाया ग्रह है। तनाव को कम करने के लिए राहु मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में यदि राहु अशुभ स्थिति में है, तो व्यक्ति को आसानी से सफलता नहीं मिलती है। राहु को मजबूत करने के लिए राहु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

 <p>बीज मंत्र 1 ॐ राहवे नमः Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.</p>	 <p>तान्त्रिक मंत्र ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः Om bhraam bhreem bhraum sah rahave namah.</p>
 <p>बीज मंत्र 2 ॐ रां राहुवे नमः Om Ram Rahuve Namah.</p>	 <p>गायत्री मंत्र ॐ शिरोरुपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि । तन्नोः राहुः प्रचोदयात ॥ Om Shirorupaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi, Tanno Rahu Prachodayat.</p>



व्रत और उपवास

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तान्त्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।



जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निर्मंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस-पास अपने गले, भुजा, जब या कमर में धारण करें।



स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पैठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।



हवन



अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- चंदन की लकड़ी।
जड़ी- अष्टगन्ध मूल।

केतु ग्रह का उपाय



केतु एक छाया ग्रह ग्रह है, जिसका अपना कोई वास्तविक रूप नहीं है। यदि कुंडली में केतु की स्थिति कमजोर होती है तो यह जिंदगी को बदतर बना देता है। जीवन में कलह बना रहता है। ऐसे में कलह से बचने के लिए इस केतु बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

 <p>बीज मंत्र 1 ॐ केतवे नमः Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.</p>	<p>तान्त्रिक मंत्र ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः Om sraam sream sraum sah ketave namah.</p>
 <p>बीज मंत्र 2 ॐ के केतवे नमः Om Ke Ketave Namah.</p>	<p>गायत्री मंत्र ॐ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि । तन्नोः केतुः प्रचोदयात ॥ Om Gadahastaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi, Tanno Ketu Prachodayat.</p>



व्रत और उपवास

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरुआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तान्त्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु-केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।



जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहूर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निर्मंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।



स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग-बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।



हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती हैं, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ, चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी- वट वृक्ष की जड़।



आपको किस देवता की पूजा करना चाहिए ?



लग्न देवता
लग्नेश पर आधारित
गणेश जी
ॐ गं गणपतये नमः







इष्ट देवता
पंचमेश पर आधारित
लक्ष्मी जी
ॐ लक्ष्मी नमः

यदि आप लग्न देवता और इष्ट देवता के बीज मंत्रों का जाप करते हैं और उनके संबंधित दिन पर व्रत रखते हैं, तो आपके जीवन की हर समस्या का समाधान स्वतः ही आपके समक्ष आ जाएगा और जीवन में सफलता के द्वार खुलते जाएंगे।




आपको किस ग्रह के मंत्र का जाप करना चाहिए ?

लग्नाधिपति	पंचमेश	दशाधिपति	भुक्ति अधिपति
 बुध	 शुक्र	 चन्द्रमा	 शनि
ॐ बुं बुधाय नमः	ॐ शुं शुक्राय नमः	ॐ सों सोमाय नमः	ॐ शं शनैश्चराय नमः

यदि आप लग्नेश के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगा क्योंकि लग्नेश को स्वास्थ्य का कारक माना जाता है। 5वें घर के अधिपति को इष्ट ग्रह कहा जाता है, यदि आप इष्ट ग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका बुद्धि और बल बढ़ेगा, अपने बुद्धि और बल के माध्यम से आप अपने सारे कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। जिस ग्रह की महादशा चल रही है, उसके मंत्र से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जिस ग्रह की अंतर्दशा चल रही है, उसके मंत्र से वर्तमान समय की घटनाएं सकारात्मक होंगी।



आपको किस ग्रह का दान करना चाहिए ?

ग्रह का दान	मंगल छठे और एकादश भाव का स्वामी होकर प्रबल अशुभ ग्रह बन जाता है।
 मंगल	

सप्ताह के उस दिन उस ग्रह से संबंधित दान करें, जैसे मंगलवार को मंगल, शनिवार को शनि और गुरुवार को बृहस्पति। दान की सूची से, आप प्रति सप्ताह 50 रुपये तक कोई भी एक वस्तु दान कर सकते हैं। किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति को दान दें।

अशुभ ग्रहों से संबंधित दान करने से हमारे ऊपर पड़ने वाले उनके नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप अशुभ ग्रह अपनी दशा या अन्तर्दशा में हमें बुरा फल नहीं देते, और यदि हम दान करने के साथ-साथ उन ग्रहों के बीज मंत्रों का जाप भी कर रहे हैं तो उस अशुभ ग्रह के परिणाम भी सकारात्मक ही आएंगे।

यदि आप किसी दिन बीज मंत्र का जाप करना भूल जाते हैं तो आप अगले दिन उसकी पूर्ति कर सकते हैं, उदाहरण के लिए अगले दिन 2 माला जाप करें। यदि अंतर अधिक हो तो एक माला अतिरिक्त जप कर बीज मंत्रों को पूरा करें।

आप किसी भी मंत्र में महारत हासिल कर सकते हैं। इसके बाद आपको सप्ताह के उस दिन संबंधित ग्रह के बीज मंत्र का जाप करना चाहिए, उदाहरण के लिए, यदि आपने बुध के बीज मंत्र में महारत हासिल कर ली है, तो आपको इसमें महारत हासिल करने के बाद हर बुधवार को मंत्र की एक माला का जाप करना चाहिए। इससे इसकी ऊर्जा बनी रहेगी।



वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म-जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।



आपका नक्षत्र
पूर्वाभाद (2)



नक्षत्राधिपति
बृहस्पति

इन वैदिक उपायों को अपनायें

- (1). पीला पुष्कराज बृहस्पति से सम्बंधित रत्न है। इसे गुरुवार के दिन अपनी तर्जनी उंगली में सोने की अंगूठी में पहनने से आपको उत्तम स्वास्थ्य और समग्र कल्याण मिल सकता है। सुनिश्चित करें कि रत्न अच्छी गुणवत्ता का हो और प्रमाणित रत्नविज्ञानी द्वारा प्रमाणित हो।
- (2). बृहस्पति का बीज मंत्र है 'ॐ ग्रं ग्र्यं ग्र्यं सः गुरुवे नमः' इस मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करना, विशेषकर सुबह स्नान करने के बाद, आपके स्वास्थ्य को लाभ पहुंचा सकता है।
- (3). गुरुवार को बृहस्पति का दिन माना जाता है। गुरुवार का व्रत करना या इस दिन केवल एक बार भोजन करना आपके स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो सकता है।
- (4). बृहस्पति का संबंध पीले रंग से है। किसी मंदिर में या घर में किसी देवता की मूर्ति या तस्वीर पर पीले फूल चढ़ाने से आपको अच्छा स्वास्थ्य मिल सकता है।
- (5). गुरुवार के दिन पीले रंग की वस्तुएं जैसे कपड़े, भोजन या पीला पुष्कराज दान करने से आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद मिल सकती है।
- (6). विशेष रूप से गुरुवार को पीले कपड़े पहनने से बृहस्पति के लाभकारी प्रभाव में वृद्धि हो सकती है।
- (7). बृहस्पति यंत्र ग्रह के सकारात्मक स्पंदनों को अवशोषित करता है। इस यंत्र को अपने घर या कार्यक्षेत्र में रखना और इसकी नियमित पूजा करना लाभकारी हो सकता है।
- (8). किसी विद्वान पुरोहित की सहायता से बृहस्पति होम का आयोजन करें। यह बृहस्पति को समर्पित एक अग्नि अनुष्ठान है, और यह महत्वपूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर सकता है।



लाल किताब के उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म-जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।



आपका नक्षत्र
पूर्वाभाद (2)



नक्षत्राधिपति
बृहस्पति

इन लाल किताब के उपायों को अपनायें

- (1). विशेष रूप से गुरुवार के दिन पीले कपड़े पहनें, क्योंकि इस रंग का संबंध बृहस्पति से है।
- (2). गाय को चने की दाल या गुड़ खिलाने से बृहस्पति का सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकता है।
- (3). विशेष रूप से गुरुवार के दिन पीली वस्तुओं का दान करने से आपको समृद्धि और सौभाग्य मिल सकता है।
- (4). बृहस्पति को प्रसन्न रखने के लिए विशेष रूप से गुरुवार के दिन मांसाहारी भोजन का सेवन करने से बचें।
- (5). अपने शिक्षकों, गुरुओं और बड़ों के प्रति सम्मान दिखाएं। बृहस्पति ज्ञान और बुद्धि का कारक है, इसलिए यह इस ग्रह को प्रसन्न करने में मदद कर सकता है।
- (6). गुरुवार के दिन पीपल के पेड़ पर जल चढ़ाएं और शाम के समय पेड़ के पास घी का दीपक भी जलाएं।
- (7). गुरुवार के दिन चने की दाल का दान करें। इससे आपको समृद्धि और सौभाग्य मिल सकता है।
- (8). घोड़े को चने की दाल खिलाने से भी आपके जीवन में सकारात्मकता आ सकती है।
- (9). विशेष रूप से अपनी तर्जनी में सोना पहनने से बृहस्पति के सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकते हैं।



कार्मिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म-जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।



आपका नक्षत्र
पूर्वाभाद (2)



नक्षत्राधिपति
बृहस्पति

इन कार्मिक के उपायों को अपनायें

- (1). ज्योतिष में बृहस्पति को गुरु या शिक्षक के रूप में जाना जाता है। नई चीजें सीखने और अपना ज्ञान दूसरों के साथ साझा करने के लिए लगातार प्रयास करें।
- (2). बृहस्पति आशावाद और सकारात्मकता से जुड़ा है। स्थितियों का उजला पक्ष देखने का प्रयास करें और जहाँ भी जाएँ सकारात्मकता फैलाएँ।
- (3). बृहस्पति उच्च शिक्षा और आध्यात्मिक विकास से जुड़ा है। उन संस्थानों को दान करें जो इन्हें बढ़ावा देते हैं, या स्वयंसेवक के रूप में अपना समय प्रदान करते हैं।
- (4). बृहस्पति उदारता और प्रचुरता का ग्रह भी है। उदारता के कार्य नियमित रूप से करें, भले ही वे छोटे ही क्यों न हों।
- (5). 'मैं ज्ञान और आशावाद से भरपूर हूँ', 'मैं अपनी प्रचुरता दूसरों के साथ साझा करता हूँ', या 'मैं हमेशा सीख रहा हूँ और बढ़ रहा हूँ' जैसे दृढ़कथन का उपयोग करें।
- (6). अपने सभी कार्यों में उच्च मूल्यों और नैतिक मानकों को बनाए रखें, क्योंकि बृहस्पति नैतिकता और सदाचार का ग्रह है।
- (7). बृहस्पति का संबंध अध्यात्म से है। विकास, ज्ञान और प्रचुरता पर ध्यान केंद्रित करते हुए ध्यान को अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करें।
- (8). बृहस्पति का संबंध पोषण से भी है। संतुलित आहार खाना और अपने शारीरिक स्वास्थ्य का ख्याल रखना इस ग्रह का सम्मान करने का एक तरीका हो सकता है।
- (9). बृहस्पति प्रचुरता और आशीर्वाद का ग्रह है। अपने जीवन में अच्छाइयों को पहचानने और स्वीकार करने की आदत डालें। एक तज्ञता पत्रिका रखें या हर दिन कुछ क्षण निकालकर मानसिक रूप से उन चीजों की सूची बनाएं जिनके लिए आप आभारी हैं।

Disclaimer

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him. If you follow the advice given in this report you do so at your own risk, www.lalkitabnadi.com/ MindSutra Software Technologies or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.lalkitabnadi.com/MindSutra Software Technologies shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to New Delhi Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.

Prepared by lalkitabnadi.com on 19 June 2024, 06:05:39PM

Please visit us at <https://www.lalkitabnadi.com> Email: lalkitabnadi@gmail.com

Phone: +91 98181 93410